मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
अक्टू०-९१
Scanned by CamScanner

वर्ष–११

अंक–१०

अक्टूबर-१९९१

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर–३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ निं निखिलेश्वराय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ।।

हे प्रभु ! हे गुरुदेव !! आप सिद्धियों के आगार, सन्यासियों के आराध्य पूज्य निखिलेश्वरानन्द हैं, आप साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हैं, आप हम शिष्यों को सिद्धि प्रदान करें।

भीनी-भीनी परत फुहार

चैतन्य रथ

पिछले दिनों चैतन्य रथ उत्तर प्रदेश की पवित्र धरती पर विचरण कर रहा था, आगे-आगे **'गुरु सेवक'** मार्गदर्शन कर रहे थे, तो पीछे-पीछे चैतन्य रथ जिस साधक के घर पर भी जाता, उसके हृदय में प्रसन्नता का आवेग उमड़ पड़ता, सैकड़ों साधकों ने इस चैतन्य रथ का लाभ उठाया, अपने घर पर पूजन सम्पन्न कराया और पत्रिका परिवार के विस्तार में सहयोग दिया।

फैजाबाद में **डॉ० बनर्जी** के नेतृत्व में और बस्ती में **हरीराम चौधरी** के नेतृत्व में सर्वाधिक पूजन क्रम सम्पन्न हुए, जिस स्थान पर भी गुरु-भाई गये उनका अत्यधिक प्रेम और हर्ष-उल्लास के साथ स्वागत सम्मान किया गया, उन्हें ऐसा लगने लगा कि वास्तव में ही हमारे परिवार के सदस्य हम से मिलने के लिए आ गये हों, और फिर चैतन्य रथ के माध्यम से तो पूज्य गुरुदेव स्वयं उसके घर पहुंच जाते हैं, और घर साधनात्मक आभा से जगमगाने लगता है, इसके बाद तो उस परिवार की निरन्तर उन्नति होती ही रहती है।

गुरु धाम

पिछली वार हमने दिल्ली में गुरु धाम के वारे में विवरण दिया था, इस वार **१५ सितम्बर से २४ सितम्बर** के बीच गुरुदेव वहीं पर रहे और सैंकड़ों साधकों ने उनसे व्यक्तिगत रूप से मिल कर लाभ उठाया, साधनात्मक जानकारी प्राप्त की, और अत्यधिक ऊर्जा के साथ वापिस अपने कर्म-क्षेत्र की ओर लौटे।

कई सदस्यों के पत्र प्राप्त होते हैं, कि उन्हें पत्रिका विलम्ब से मिलती है, या डाक में गुम होने का अंदेशा बना रहता है, इसके लिए एक सुझाव यह है, कि दिल्ली तथा आस-पास के क्षेत्रों और सदस्यों की पत्रिकाएं सुरक्षित रूप से गुरु धाम दिल्ली में पहुंचा दी जांय, और साधक वहां से प्राप्त कर लें, या उनके मित्र या परिचित हों तो मंगवा लें।

दिल्ली निवासियों के लिए तो यह व्यवस्था अत्यधिक अनुकूल हो सकती है, सम्बन्धित पत्रिका सदस्यों के पत्र आने पर ही इस सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सकेगा।

अठारह सिद्धियां

अठारह सिद्धियों के बारे में जब से पत्रिका में प्रकाशित हुआ है, लोगों के पत्र जरूरत से ज्यादा आने लगे हैं, और उनके पत्रों से यह सुनिश्चित होता है, कि वे किसी भी मूल्य पर उन सिद्धियों में से कुछ सिद्धियां प्राप्त करना चाहते हैं।

इस अवधि में नियमानुसार जो आजीवन सदस्य बने हैं, या जिनकी प्रेरणा से आजीवन सदस्य बने हैं, उन्हें **'अष्टादश सिद्धि यन्त्र'** भिजवा दिया है, और साथ ही साथ उनसे सम्बन्धित साधनाओं का विस्तार से विवेचन और वर्णन भी।

हम शीघ्र ही यह प्रयत्न करने जा रहे हैं, कि कुछ साधकों को जोधपुर बुला कर उन्हें विधिवत ज्ञान और जानकारी दी जाय, यूं प्रत्येक साधक का जोधपुर में स्वागत है, यदि वे साधना से संबंधित जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।

कार्यक्रम सूचना

पूरे भारतवर्ष में स्थान-स्थान पर साधनात्मक शिविर और साधनात्मक प्रयोग चल रहे हैं, **आष्टा** में पिछले दिनों साधनात्मक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें **गोस्वामी** के नेतृत्व में कई साधकों ने भाग लिया, इसी प्रकार **बैंगलौर** में **गोवर्धन** के घर पर विशिष्ट साधनात्मक कार्यक्रम बना जिसमें गुरु पूजन और ध्यान प्रक्रिया सम्पन्न हुई, इसी प्रकार **नरसिंह गढ़** में **चन्द्र प्रकाश सोनी** के नेतृत्व में सिद्धाश्रम साधक परिवार की शाखा का उद्घाटन हुआ और **निखिलेश्वरानन्द ज्ञान चेतना केन्द्र** पर श्री सद्गुरुदेव का चित्र स्थापित कर आरती, भजन-कीर्तन का कार्यक्रम संपन्न हुआ, इसी प्रकार २१ तारीख को इन्होंने यज्ञ सम्पन्न किया।

जगदलपुर में **अजय राठौर** के नेतृत्व में **गुरुदेव ध्यान चेतना केन्द्र** में साधनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न किया गया, जिसका कई लोगों ने अनुभव किया और कई लोग इस पत्रिका परिवार से जुड़े।

मद्रास में **श्री एस० लाल** के नेतृत्व में **निखिलेश्वरानन्द धाम** का श्रीगणेश हुआ उन लोगों ने अपने प्रयत्नों से पूरा एक भवन ही खरीद लिया, जहां पर इस प्रकार के कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं।
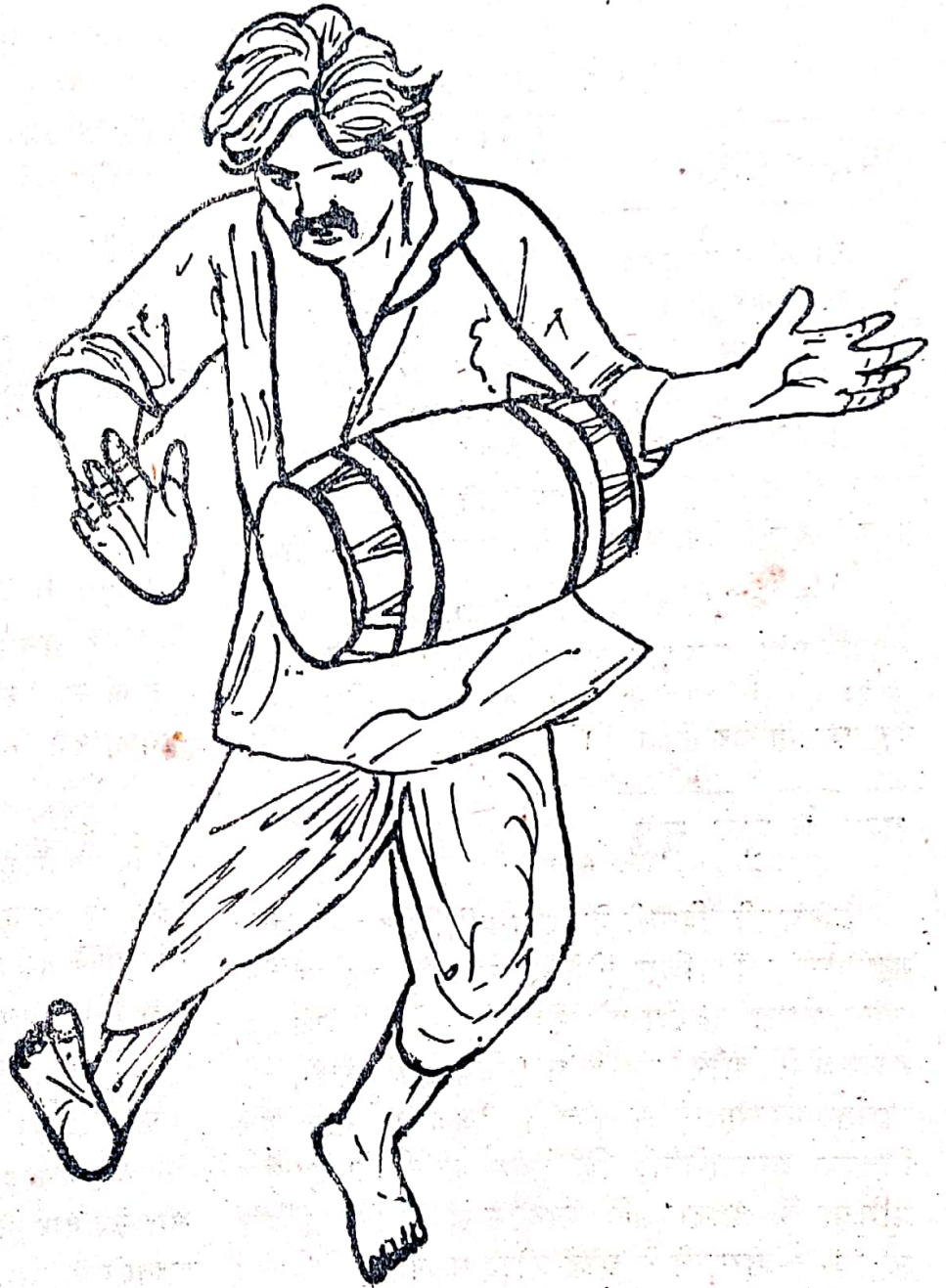
उन्होंने एक नई परम्परा डाली, कि वे प्रत्येक रविवार को सब मिल कर किसी एक साधक के घर पर जाते हैं, वहां पर यज्ञ कार्य सम्पन्न होता है, ध्यान, चिन्तन के साथ गुरु-पूजन, आरती सम्पन्न करने के बाद साधनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता है, जिस घर में भी यह निमन्त्रण मिलता है, उस घर में एक आध्यात्मिक वातावरण बनता है, परिवार के सदस्यों पर अच्छे आध्यात्मिक संस्कार

बनते हैं, और इस प्रकार वह दिन गप्पबाजी को छोड़ कर एक स्वस्थ चिन्तन, स्वस्थ धारणा और स्वस्थ विचार प्रक्रिया के साथ सम्पन्न होता है।

कार्तिक पूर्णिमा

२१ नवम्बर को कार्तिक पूर्णिमा है, और १५-११-९१ से २१-११-९१ के बीच का समय **सिद्धि पर्व** कहलाता है, इस अवधि में पूरे भारतवर्ष में फैले हुए शिष्यों और साधकों में से २० घरों में पूज्य गुरुदेव **त्रिजटा अघोरी** के साथ जायेंगे, वे साधारण रूप में या संन्यस्त रूप में हो सकते हैं, वास्तव में ही जिन घरों में भी पूज्य गुरुदेव जायेंगे, वह घर तो सौभाग्यशाली ही होगा।

इसके अतिरिक्त आपके अनुनय, विनय, प्रार्थना, अपनत्व और आग्रह से भरे पत्र के फलस्वरूप भी पूज्य गुरुदेव इस सिद्धि पर्व के अवसर पर सूक्ष्म रूप में आपके घर पदार्पण कर सकते हैं।

तन्त्र के मूल सूत्र

शीघ्र ही दिल्ली के एक प्रतिष्ठित संस्थान से यह पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है, यह तन्त्र के उस मूलभूत स्वरूप को स्पष्ट करेगी, जिससे इस सम्बन्ध में और इस क्षेत्र, विषय में फैली हुई भ्रान्त धारणाएं समाप्त हो सकेंगी, और यह विचार बन सकेगा, कि तन्त्र अपने आपमें शुद्ध प्रक्रिया है, और इसके माध्यम से समस्याओं का समाधान आसानी से और शीघ्र सम्भव है।

उत्पत्ति एकादशी प्रयोग

इस बार **१ दिसम्बर को उत्पत्ति एकादशी पर्व** है, जो कि पुत्र सन्तान की कामना रखने वाले व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण सौभाग्यदायक पर्व माना जाता है।

एक विशेष मन्त्र के माध्यम से उन स्त्री-पुरुषों की इच्छाएं पूरी हो सकती हैं, जिनके घर में सन्तान नहीं है, या पुत्र नहीं है।

पति-पत्नी दोनों इस तारीख से एक दिन पहले जोधपुर आ जांय और उत्पत्ति एकादशी की रात्रि को हाथ में दीपक ले कर पति-पत्नी दोनों खड़े हो कर उस विशिष्ट मन्त्र का निरन्तर जप करें, जो गुरुदेव गोपनीय तरीके से उन्हें बतायेंगे।

पूरी रात इस प्रयोग को सम्पन्न करने से उनकी मनोकामना पूर्ण हो सकती है, क्योंकि यह प्रयोग अपने आपमें ही अचूक और तेजस्वी है, जो भी साधक चाहें, निःशुल्क इसका लाभ जोधपुर में आ कर उठा सकते हैं।

ज्योतिर्मय

कनाडा में **श्रीमती निर्मल** सिद्धाश्रम परिवार के लिए अनथक कार्य कर रही हैं, पिछले दिनों यह जोधपुर आईं और दो दिन रहीं, जाने के बाद उनका पत्र मिला है—

"गुरुदेव ! जब से आपके दर्शन किये, ऐसा कोई भी दिन नहीं गुजरा, जिस दिन आपका मैंने स्मरण न किया हो, मैं तो कृतार्थ हो गई, आपके दर्शन पा कर, मैंने आपके दर्शन चार वर्षों के बाद किये, आप पहले से कहीं अधिक तेजपुंज, ज्योतिर्मय और प्रकाशमय लग रहे थे, प्रकाश की आभा अपना चमत्कार तब दिखाती थी, जहां आप एक क्षण ठहर जाते थे।"

"आज तक लाखों-करोड़ों गुरुओं के दर्शन किये, और हर बार ही अपने "सदगुरु" को आंखें तलाश करती रही, आज मुझे अपना "सदगुरु" मिल गया, रोम-रोम रोमांचित हो उठा अपने सदगुरु को पाकर, मुझे इस बात पर बड़ा ही फख्र है कि मेरा सद्गुरु इतना विद्वान और आत्म अनुभवी है, जो कदम-कदम पर मेरा पथ प्रदर्शन कर सकता है, मेरा ही क्या सारे संसार का मार्ग दर्शन कर सकता है, गुरुदेव सारे संसार की अपलक आंखें आप जैसे विद्वान पर ही लगी हुई हैं, जो संसार का एक मात्र आधारशिला बन सकता है, काश लिखती ही जाऊं ! कलमें रुकने का नाम न लें, सारे परिवार की तरफ से प्रणाम।"

हमने पैरों में अंगारों के घुंघरू बांधे हैं

सत्य बहुत कड़वा होता है, और सत्य को पचाना उससे भी ज्यादा कड़वा अनुभव होता है, परन्तु जीवन में साधना और इष्ट से साक्षात्कार सत्य है, और जीवन में मनुष्य का एक मात्र कर्त्तव्य धर्म, चिन्तन और लक्ष्य यही होता है कि वह एक बार उस विराट सत्ता के दर्शन कर ले जिसे ब्रह्म या इष्ट कहते हैं।

असमंजस में मत रहो

जो कुछ होना है वह हो रहा है, एक बात तो यह निश्चित रूप से जान लो कि जीवन में जागना अत्यधिक कठिन और दुष्कर होता है, हम सब नींद में हैं, और नींद में ही जीवन को व्यतीत कर देने में सुख अनुभव होता है, क्योंकि यह नींद हमने अपने चारों ओर बांध रखी है, हमने यह अनुभव कर लिया है कि जीवन में जो कुछ चल रहा है, वह चल ही रहा है, इस नींद से हमें बहुत अधिक फायदे हैं, हम प्रत्येक प्रकार की न्यूनता को भगवान की मर्जी समझ कर सहन कर लेते हैं, नींद में न अभाव होता है न पीड़ा, हमने यह मान लिया है, कि हम इसी प्रकार जीवित बने रहेंगे, ये बेटे-बेटियां बड़े हो कर हमें सुख पहुंचाएंगे, यह धन हमारे लिए बहुत अधिक आनन्द की वस्तु है, परन्तु ऐसा नींद में पड़ा हुआ व्यक्ति ही सोच सकता है, इसीलिए मैं कहता हूं कि नींद में चलते रहना सुखकर प्रतीत होता है, परन्तु जागना एक बहुत कठिन और दुष्कर क्रिया है, यह जरूरी नहीं है कि हम अपने जीवन में जाग जांय, यह जरूरी नहीं है कि हमें कोई व्यक्ति मिल जाय और ठोकर मार कर जगा दे, क्योंकि जन्म लेना अपने आप में बहुत बड़ी घटना नहीं थी, उसी प्रकार जन्म से लगाकर आज तक नींद में हम चल रहे हैं, जिस मृग तृष्णा में हम जी रहे हैं, वह भी अपने आप में कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है, घटना तो तब बनेगी जब तुम जीवन में जाग जाओगे, घटना तो तब बनेगी जब इस जीवन में तुम्हें चेतना प्राप्त हो जायगी, तुम्हारी आंखें खुल जांय, तुम्हें सत्य की प्रतीति होने लग जाय, और तुम अहसास कर सको कि जो कुछ जीवन बचा है, उस जीवन को हाथ में ले कर सत्य तक पहुंचना ही है, और जिस वजह से हमारा जन्म हुआ है, उस वजह को सार्थकता प्रदान करनी ही है।

हजारों साल बाद ऐसा समय आता है

और मैं ठीक कह रहा हूं कि प्रत्येक के जीवन में ऐसी घटना नहीं घट जाती, ऐसा क्षण तो हजारों वर्षों के

बाद आता है, कि तुम्हारे जीवन काल में कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो तुम्हें ठोकर मारकर जगाने की हिम्मत रखता हो, वह तो जीवन का सौभाग्यदायक क्षण होता है; जब तुम्हारे जीवन में कोई ऐसा व्यक्तित्व उपस्थित हो जो तुम्हें "अपना" कहता हो, जो तुम्हारे सुख-दुःख की चिन्ता रखता हो, जो तुम्हारे जीवन को संवारने की कोशिश में लगा हो, जिसके मन में एक ही धुन, एक ही लगन होती है, कि यदि इस बार भी ये नहीं जागे तो फिर सैकड़ों वर्ष नहीं जाग पाएंगे, यदि इस बार भी इनकी नींद नहीं हटी तो फिर निकट भविष्य में इनकी नींद हटाने वाला व्यक्तित्व उपस्थित नहीं होगा, यह तो सौभाग्य का क्षण होता है, कि हमारे जीवन में ऐसे व्यक्तित्व का पदार्पण हो, जिसका हमारे ऊपर अधिकार हो, जो हमें अपने प्राणों का ही एक अंश समझता हो, जो हमें नींद से जगाने की सामर्थ्य रखता हो, और इस मोह ग्रस्त नींद से जगा कर वास्तविकता के दर्शन करने और कराने की हिम्मत प्रदान करता हो।

और यह नींद से जागना अपने आपमें ज्ञान को प्राप्त करना है, अपने आपमें चेतना को अनुभव करना है, अपने आपमें बुद्धत्व के दर्शन करना है, जागना तो जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है, जब हम इससे साक्षात्कार करने की ओर बढ़ सकें, यह जागना तो जीवन का परम सत्य है, जिसके माध्यम से हम उस व्यक्तित्व से एकाकार हो सकें, जिसे "गुरु" कहा जाता है, और जिसकी प्रशंसा संसार के सभी ग्रन्थों ने एक स्वर से की है।

मैं तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा हूं

इसलिए कि यह मेरा कर्त्तव्य है, इसलिए कि मैं पूरी तरह से जागा हुआ प्रबुद्ध व्यक्तित्व हूं और जागने पर मैंने सत्य के दर्शन किये हैं, बुद्धत्व का अनुभव किया है, और यही अनुभव मैं तुम लोगों को भी कराना चाहता हूं, यही ज्ञान यही चेतना मैं तुम लोगों को भी देना चाहता हूं, जागने के बाद मुझे जो आनन्द की अनुभूति हुई है, है, वह अनुभूति मैं आप लोगों में भी बांटना चाहता हूं, बुद्धत्व को प्राप्त होने पर ज्ञान की जो पूर्णता मैंने अनुभव की है, साधना के माध्यम से जो कुछ प्राप्त किया है, वह सब तुम्हें दे देना चाहता हूं, जो कुछ मैंने कुण्डलिनी जागरण और मन के भीतर स्थित ब्रह्माण्ड को जिस रूप में मैंने देखा है, ऐसे ब्रह्माण्ड से तुम्हारा साक्षात्कार करा देना चाहता हूं, इसीलिए मैं तुम्हारे दरवाजे पर खड़ा हूं, इसीलिए मैं बार-बार तुम्हारे प्राणों पर टहोका मार रहा हूं, इसीलिए मैं बार-बार तुम्हारे सामने उपस्थित हो कर तुम्हें आवाज देता हूं कि अब भी समय है, कि तुम जाग सको, अब भी समय है कि तुम अपनी नींद को त्याग सको, जिस नींद में तुम्हारी कई पीढ़ियां व्यतीत हो गईं और उन्हें कुछ भी नहीं मिला, नंगे पैदा हुए और ठीक उसी तर्ज पर नंगे ही श्मशान में जाकर सो गये, उन्होंने अपना पूरा जीवन नींद में ही व्यतीत कर दिया, पर मैं इस बार तुम्हारे दरवाजे पर खड़ा हूं कि तुम्हें इस नींद से जगा सकूं, मैं तुम्हारे दरवाजे के खुलने की प्रतीक्षा कर रहा हूं, कि तुम्हें ताजी सुगन्धित हवा का अनुभव हो सके, तुम्हारे प्राणों और फेफड़ों में शुद्ध वायु का संचार हो सके और तुम जीवन में उस आनन्द को, उस बुद्धत्व को प्राप्त कर सको, जो तुम्हारे सामने है, जिसे तुम प्राप्त कर सकते हो, जिसे प्राप्त करने का तुम्हें अधिकार है, और मैं तुम्हारे इस कार्य में सहयोगी हूं, इसीलिए तो हर बार तुम्हें आवाज देता हूं, इसीलिए तो हर बार तुम्हारे दिल पर दस्तक देता हूं, इसीलिए तो हर क्षण तुम्हारे जागने की प्रतीक्षा कर रहा होता हूं।

शायद कभी तुम्हें वचन दिया होगा

तुम मेरे शिष्य हो, इससे भी आगे बढ़ कर मेरे प्राणों के अंश और आत्मा की अनुभूति हो, तुम्हारे शरीर में गुरु रूप में मेरा ही रक्त दौड़ रहा है, तुम्हारी मांस पेशियों में मेरी ही चेतना प्रज्वलित है, इसीलिए तुम्हें मैं अपने से अलग मान ही नहीं रहा हूं, अपने से अलग कर के देख ही नहीं रहा हूं,

मैं तो इसी निर्णय पर हूं कि जिस बुद्धत्व के, जिस ध्यान के, जिस चेतना के मैंने दर्शन किये हैं, जो कुछ मैंने प्राप्त किया है, वह तुम्हें बांट दूं और पूर्णता के साथ तुम में उस आनन्द का उद्रेक कर दूं, जिससे कि वह सब कुछ तुम्हें इसी जन्म में प्राप्त हो जाय, जो मैं तुम्हें देना चाहता हूं।

तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध केवल इसी शरीर से नहीं है, अपितु इससे पहले २५ जन्मों से तुम्हारा मेरा सम्बन्ध है, तुम मेरे शिष्य रहे हो और मैंने तुम्हें गुरु रूप में अपनत्व दिया है, पर हर बार तुम जगाने पर भी कसमसा कर फिर सोते रहे, हर बार तुम्हें आवाज दी, पर तुमने अनसुनी कर दी, हर बार मैंने तुम्हें इशारा किया और हर बार तुमने उस इशारे को अनदेखा कर दिया।

पर इस बार यह नहीं चल सकता, इस बार बीच में ही रहने की प्रक्रिया नहीं रह सकती, इस बार केवल आवाज दे कर ही चुप नहीं रह जाऊंगा अपितु झकझोर कर जगाऊंगा भी, और हाथ पकड़ कर उठाऊंगा भी, इस बार मैं तुम्हें उस मन्जिल तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्प हूं जो तुम्हारे जीवन का लक्ष्य है, जिसकी वजह से तुम्हें बार-बार जन्म लेना पड़ा है, जिसकी वजह से तुम्हें हर बार मल मूत्र के रास्ते से हो कर बढ़ना पड़ा है, पर ऐसा कब तक चलेगा, इतनी घटिया जिन्दगी कब तक ढोते रहोगे, कब तक तुम नींद में गाफिल बने रहोगे, आखिर कोई न कोई तो क्षण आयेगा जब तुम्हारे अन्दर की चिनगारी जागृत होगी, जब मेरी ठोकर तुम्हारे सीने पर अनुभव होगी, जब मेरी आवाज पूरी क्षमता के साथ सुन पाओगे और दौड़ कर मेरे पास पहुंच जाओगे, यह मेरे पास पहुंचना ही तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी घटना होगी, यह मुझ में मिल जाने की क्रिया ही तुम्हारे जीवन की महान उपलब्धि होगी, यह अपने आपको विसर्जित कर मुझसे एकाकार हो जाने क्रिया ही तुम्हारे जीवन की पूर्णता और अहमन्यता होगी।

ज्ञानम्

और मैं तुम्हें प्राणों के साथ आवाज दे रहा हूं इसलिए कि पिछले २५ जन्मों में किसी भी जन्म में जो तुम्हें वचन दिया है, पूर्णता तक पहुंचाने का जो वायदा किया है, वह इस बार पूरा कर लेना चाहता हूं, यदि इस बार ऐसा नहीं हो पाया तो फिर आगे कभी भी नहीं हो पायेगा, यदि इस बार भी तुम चूक जाओगे तो निश्चय ही इस जिन्दगी को चूक जाओगे, यदि इस बार

भी तुमने मुझे नहीं पहिचाना तो पूरी जिन्दगी तुम्हारे हाथ से निकल जायेगी और तुम एक ज्ञान से, तुम एक पूर्णत्व से वंचित रह जाओगे।

इसके लिए तो पैरों में अंगारों के घुंघरू-बांधने पड़ेंगे

साक्षात् और जीवन्त गुरु के साथ रहने की क्रिया तलवार के धार पर चलने की क्रिया होती है, जीवन्त गुरु के साथ क्षण बिताने की क्रिया धधकती हुई आग में से निकलने की क्रिया होती है क्योंकि जीवन्त गुरु तुम्हें ठोकर मारने की कला जानता है, क्योंकि जीवन्त गुरु तुम्हारी नींद को हटा कर जागृत करने की क्रिया जानता है, क्योंकि जीवन्त गुरु तुम्हारे झूठे मोह और अहंकार को तोड़ने की क्रिया जानता है, और जब तुम्हें कोई नींद से जगाता है तो तुम्हें बड़ी व्याकुलता होती है, जब तुम्हें कोई तुम्हारे नकली घेरे से बाहर निकालने की क्रिया करता है तो तुम्हें पीड़ा पहुंचती है, क्योंकि तुम उसी खोल में प्रसन्न हो, परन्तु वैसा जीवन तो व्यर्थ और घटिया जीवन बन कर रह जायेगा।

यदि तुम्हें पूर्णता प्राप्त करनी ही है, यदि तुम्हें जीवन्त गुरु के साथ समय व्यतीत करना ही है, यदि तुम्हें बुद्धत्व को, पूर्णत्व को अनुभव करना ही है, तो यह जरूरी है, कि तुम अपने पैरों में अंगारों के घुंघरू बांध लो, तुम धधकती हुई आग में से निकलने के लिए तैयार हो जाओ, क्योंकि समाज तो हर बार तुम्हारे बीच में बाधाएं पैदा करेगा, तुम्हारा परिवार हर बार तुम्हारे पैरों में बेड़ियां डालने की कोशिश करेगा, हर बार तुम्हें झूठी दिलासा देगा, हर बार तुम्हें सब्जबाग दिखायेगा, हर बार तुम्हें भयभीत करने की कोशिश करेगा।

पर तुम धधकते हुए अंगारे हो ही, जिस पर राख पड़ गई है, मैं फूंक से उस राख को हटाने की कोशिश कर रहा हूं, जिससे कि अन्दर से तुम्हारा दैदीप्यमान स्वरूप निखर सके, तुम खदान से निकले हुए कच्चे हीरे की तरह हो, जिसे मेरे हाथों में पड़ कर संवरने की क्रिया होनी है, इसीलिए तो मैं कहता हूं कि तुम्हें अपने आपको तैयार करना पड़ेगा, एक निश्चय करना पड़ेगा, मन में एक धारणा, एक संकल्प बनाना पड़ेगा, कि मुझे हर हालत में इस बार उस समुद्र में छलांग लगा देनी है, जो अपने आपमें पूर्णता का आगार है।

और मैं तुम्हारे साथ में हूं, तुम्हारे प्रत्येक क्षण के साथ, तुम्हारे प्रत्येक क्रिया कलाप के साथ, तुम्हारे पास और मेरे पास बहुत थोड़ा सा समय बचा है, और इस थोड़े से समय में, बहुत लम्बा रास्ता पार करना है, तुम मुझे समर्पण दो मैं तुम्हें सिद्धियां दूंगा, तुम मुझे अपना जीवन दो मैं तुम्हें बुद्धत्व दूंगा, तुम अंगारों के घुंघरू बांध कर मेरे सामने खड़े हो जाओ मैं तुम्हें शान्ति, साधना, सफलता और ब्रह्मत्व देने का वायदा करता हूं।

इतना ध्यान रखना कि यह क्षण चूक न जाय, इतना ध्यान रखना कि सोचने विचारने में समय बरबाद न हो जाय, इतना ध्यान रखना कि जीवन्त गुरु का हाथ पकड़ने से वंचित न हो जाएं, तुम्हें कुछ नहीं करना है, मुझमें समाहित हो जाना है, समर्पण कर देना है, फिर मैं सब कुछ संभाल लूंगा, यह तुम्हारे प्रति मेरा वायदा है। ●

श्रीयन्त्र

की चर्चा तो पूरे विश्व में है

क्योंकि यह लक्ष्मी-आबद्ध की श्रेष्ठतम प्रक्रिया है

पर

सर्वोच्च विधि है

पारद श्रीयन्त्र

जो न देखा न सुना

पर इस बार पत्रिका कार्यालय यही प्रस्तुत करने जा रहा है

पत्रिका कार्यालय ने समय-समय पर अद्‌भुत, तेजस्वी और प्रभावकारी यन्त्र पत्रिका पाठकों, साधकों और शिष्यों को प्रदान किये हैं, परन्तु इन सब में श्रीयन्त्र तो अपने आपमें ही भव्य और अद्वितीय माना जाता है, इसलिए कि इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, इसलिए कि जिस घर में भी श्री यन्त्र होता है, उस घर में गरीबी रह ही नहीं सकती, जिस घर में श्रीयन्त्र स्थापित होता है, उसके घर में ऋण की समस्या संभव नहीं है, जिस घर में अपनी भव्यता के साथ श्रीयन्त्र स्थापित है, उसके घर में आठों लक्ष्मियां अपने सम्पूर्ण वेग के साथ आबद्ध रहती ही हैं।

पूरे विश्व में चर्चा

वैज्ञानिक पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएं इस बात की साक्षी हैं, कि केवल भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में श्रीयन्त्र की चर्चा है, लगभग सौ से ज्यादा ग्रन्थ विश्व की कई भाषाओं में श्रीयन्त्र पर लिखे गये हैं, और इस बात को अनुभव किया है, कि वास्तव में ही श्रीयन्त्र अपने आप

में एक जटिल प्रक्रिया है, पर इसके साथ ही साथ यह उन्नति का सर्वोत्तम साधन भी है।

इंग्लैण्ड में लगभग सभी घरों में श्रीयन्त्र स्थापित हो रहा है, केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी भी अपने घरों में श्रीयन्त्र स्थापित करने लगे हैं, और उन्होंने दो टूक शब्दों में स्वीकार किया है, कि जीवन की समस्यायों के समाधान के लिए यह यन्त्र अपने आपमें बेजोड़ है, मैंने कई अंग्रेज पदाधिकारियों के घरों में भी श्रीयन्त्र को स्थापित देखा है, और इसकी चर्चा सुनी है, जापान में विवाह के अवसर पर नवविवाहिता कन्या को श्रीयन्त्र देने का विधान बन गया है, अफ्रीका में तो इस यन्त्र की देवता समझ कर पूजा करते हैं, अमेरिका में मैंने कई भारतीय व्यक्तियों के घरों में तो श्रीयन्त्र देखा ही है, अमेरिकन लोगों के घरों में भी इस श्रीयन्त्र को स्थापित देख कर मन ही मन विचार हुआ है, कि वास्तव में ही श्रीयन्त्र में कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जिससे पूरा विश्व इसके पीछे पागल है, जिससे विश्व के बुद्धिजीवी और वैज्ञानिक इस यन्त्र की महत्ता को अनुभव करने लगे हैं, अपने घरों में स्थापित करने लगे हैं और यह अनुभव करने लगे हैं, कि वास्तव में ही श्रीयन्त्र के माध्यम से हम अपने जीवन की भौतिक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

श्रीयन्त्र के प्रकार

श्रीयन्त्र कई प्रकारों में मिलता है, चन्दन पर अंकित श्रीयन्त्र, सफेद आक पर अंकित श्रीयन्त्र, पंच धातु पर अंकित श्रीयन्त्र, और यदि गणना की जाय तो लगभग १०८ तरीकों से श्रीयन्त्र अंकित दिखाई देते हैं, सब का अलग-अलग महत्व है, अलग-अलग विधान है।

इसके अलावा श्रीयन्त्र के प्रकार भी कई हैं, उदाहरण के लिए नया मकान बनाते समय **भूगर्भ श्रीयन्त्र,** मकान के चारों कोनों में स्थापित करने से मकान में निरन्तर उन्नति होती रहती है, दुकान में **व्यापार श्रीयन्त्र** स्थापित करने से व्यापार में बेतहाशा वृद्धि होने लगती है, छोटे बालकों
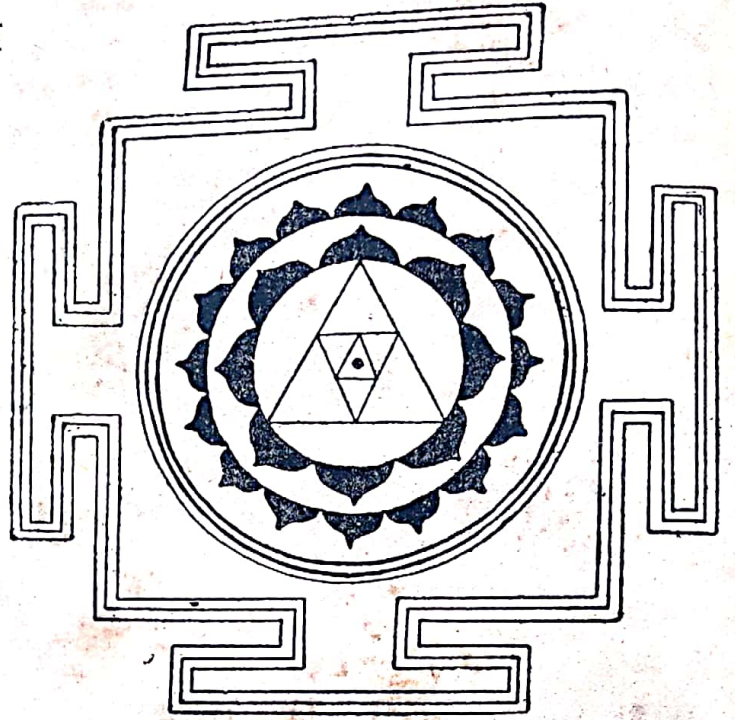
के गले में **लघु श्रीयन्त्र** पहिनाने से उनके स्वास्थ्य में अनुकूलता प्राप्त होती है, **तांबे पर निर्मित श्रीयन्त्र** घर के रोगों को भगाने में पूर्ण रूप से सहायक है, **पंच धातु पर उत्कीर्ण श्रीयन्त्र** घर की उन्नति के लिए अनुकूल है, और इस प्रकार श्रीयन्त्र पर जितनी भी शोध हुई है उन सब ने एक स्वर से स्वीकार किया है, कि वास्तव में ही श्रीयन्त्र की भव्यता और महत्ता अपने आपमें अद्वितीय है।

श्रीयन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ—पारद श्रीयन्त्र

श्रीयन्त्रों में विभिन्न प्रकारों के बावजूद भी अभी तक तांत्रिक ग्रन्थों और शास्त्रों में पारद शिवलिंग और पारद श्रीयन्त्र की चर्चा तो सुनी थी, एक-दो स्थानों पर पारद शिवलिंग देखा भी है, परन्तु पारद श्रीयन्त्र अभी तक न तो देखा गया है, और न सुना गया है।

यह संभव कैसे है कि तरल पारे को ठोस बना कर उससे श्रीयन्त्र का निर्माण किया जाय, और फिर इसमें भव्यता, श्रेष्ठता और प्रभावकता प्रदान की जाय, क्योंकि

पारद श्रीयन्त्र तो अपने आपमें ही सर्वोच्च भव्यता है, पारा भगवान शिव का विग्रह कहलाता है, समस्त देवताओं का पुंजीभूत स्वरूप पारे को माना गया है, और लक्ष्मी ने स्वयं स्वीकार किया है, कि **"पारद ही मैं हूं और मेरा ही दूसरा स्वरूप पारद है"।**

और फिर ऐसे शुद्ध और भव्य पारद से श्रीयन्त्र का निर्माण किया जाय तो वह तो अपने आपमें दर्शनीय वस्तु बन जाती है, हमने इस बार ऐसे ही पारद श्रीयन्त्र का निर्माण किया है, जो अपने आपमें ही भव्यता और श्रेष्ठता लिये हुए है, यह पत्रिका पाठकों का सौभाग्य होगा, कि उन्हें इस युग में ऐसी भव्य और अद्वितीय वस्तु सहज सुलभ है, पर यह पारद श्रीयन्त्र केवल पत्रिका के सदस्यों को प्रदान किया जा सकता है, क्योंकि इस प्रकार के श्रीयन्त्र का निर्माण अपने आपमें कठिन श्रमसाध्य और व्यययुक्त है, हकीकत में देखा जाय तो एक पारद श्रीयन्त्र पर लगभग छः सौ रुपये से भी ज्यादा व्यय आ जाता है, परन्तु प्रश्न तो मूल्य का नहीं है, प्रश्न इस पर होने वाले व्यय और परिश्रम का नहीं है, प्रश्न तो ऐसी दुर्लभ वस्तु प्राप्त होने का है, और इस बार पिछले पांच वर्षों की कठिन चुनौती को स्वीकार कर परिश्रम के बाद इस प्रकार के श्रीयन्त्र का निर्माण करने में सफलता पाई है, और फिर जब हमने इसका प्रयोग किया है तो इसके माध्यम से शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई है।

पारद श्रीयन्त्र की कोई विशेष पूजा पद्धति नहीं होती, न इसके लिए किसी मन्त्र जप की जरूरत है और न यह आवश्यक है कि इसके सामने दीपक जलाया जाय अथवा अनुष्ठान किया जाय, यह तो जिस घर में स्थापित होता है, वहां स्वतः ही आर्थिक उन्नति होने लग जाती है, जिस प्रकार से बाजार से अगरबत्ती ला कर जिसके भी घर में जलाई जायेगी उसी घर में सुगन्ध प्रवहित होने लगेगी, उस अगरबत्ती की सुगन्ध के लिए मन्त्र जप या प्रयोग आवश्यक नहीं है, ठीक इसी प्रकार इस श्रीयन्त्र के लिए भी, सामान्य व्यक्तियों के लिए कोई विशेष प्रयोग या अनुष्ठान आदि की आवश्यकता नहीं है, यह तो घर में स्थापित होने पर अपने आपमें ही अनुकूलता प्रदान करने वाला जाज्वल्यमान रत्न है, जिसके प्रकाश से पूरा घर उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है।

दीपावली पर्व पर

इस वर्ष ५-११-९१ को दीपावली का भव्य पर्व सम्पन्न होने जा रहा है, जो कि लक्ष्मी का ही पर्व कहलाता है, यदि इस अवसर पर हम इस प्रकार के दुर्लभ पारद श्रीयन्त्र को स्थापित करते हैं, तो यह अपने आपमें ही एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बन सकती है, यदि हम विधि-विधान के साथ पारद श्रीयन्त्र को अपने घर में, दुकान में, कार्यालय में या व्यापारिक प्रतिष्ठान में स्थापित करते हैं, तो यह अपने आपमें श्रेष्ठता, भव्यता और पूर्णता की की ही उपलब्धि है।

और **लक्ष्मीसूक्त** के अनुसार अष्टमी से अमावस्या अर्थात् **१ नवम्बर से ५ नवम्बर** के बीच किसी भी दिन इस पारद श्रीयन्त्र को अपने घर में हम स्थापित कर इसके दर्शन करें, और श्रद्धा के साथ इसको अपने घर में प्रतिस्थापित करें, तो निश्चय ही यह आपके लिए इस वर्ष की महत्वपूर्ण घटना मानी जायेगी क्योंकि अन्य वस्तुएं तो अन्य स्थानों पर सहज संभव हैं, परन्तु इस प्रक र का दुर्लभ श्रीयन्त्र आसानी से प्राप्त नहीं होता।

मन्त्र सिद्ध

और फिर श्रेष्ठ पंडितों द्वारा प्रत्येक श्री यन्त्र को विशेष मुहूर्त में निर्मित कर लक्ष्मी सूक्त के मन्त्रों द्वारा इसको सिद्ध, चैतन्य एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त बनाया है, हमने यह प्रयत्न किया है कि प्रत्येक श्री यन्त्र अपने आपमें तेजस्वी हो, और जिसके भी घर में स्थापित हो, उसके घर में आर्थिक उन्नति होनी चाहिए, यही नहीं अपितु उसके जीवन की समस्याओं का समाधान होना ही चाहिए।

और फिर श्रीयन्त्र विशेष कर पारद श्रीयन्त्र के माध्यम से तो आठों प्रकार की लक्ष्मियां पूर्ण रूप से आबद्ध हो कर स्थापित करने वाले व्यक्ति के घर में अपना प्रभाव देती ही हैं, संतान लक्ष्मी, व्यापार लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, स्वास्थ्य लक्ष्मी, राज्य लक्ष्मी, वाहन लक्ष्मी, कीर्ति लक्ष्मी और आयु लक्ष्मी के साथ-साथ जीवन के अभाव, जीवन की दरिद्रता और जीवन के कष्ट दूर करने में इस प्रकार का श्रीयन्त्र अपने आपमें ही अनुकूलता और भव्यता प्रदान करता है।

'श्रीसूक्त' के अनुसार जिसके भी घर में पारद श्रीयन्त्र स्थापित होता है, स्वतः ही वहां पर गणपति और लक्ष्मी का स्थायी वास होता है, जिसके भी घर में पारद श्रीयन्त्र होता है, अपने आपमें वह व्यक्ति रोग-रहित एवं ऋण-मुक्त होकर जीवन में आनन्द एवं पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, इसीलिए हमने इस प्रकार के पारद श्रीयन्त्र को शुद्धता, पवित्रता एवं प्रामाणिकता देने का प्रयास किया है।

पारद श्रीयन्त्र प्रयोग

जैसा कि मैंने बताया कि इस प्रकार का पारद श्रीयंत्र स्थापित करने के लिए किसी प्रकार का प्रयोग, पूजा या मन्त्र जप की आवश्यकता नहीं होती, सामान्य व्यक्ति भी पारद श्रीयन्त्र का पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं, पर कई तांत्रिक ग्रन्थों में पारद श्रीयन्त्र की साधना पद्धति भी विस्तार से दी है, **गुरु गोरखनाथ** ने तो **'श्रीयन्त्र सपर्या'** नामक पूरे ग्रंथ की रचना ही कर दी है, भगवत्पाद **शंकराचार्य** ने पारद श्रीयन्त्र के बारे में लगभग छः सौ पृष्ठों का ग्रंथ लिख कर यह स्वीकार किया है कि यह अपने आपमें तेजस्वी प्रकार है।

उपरोक्त ग्रन्थ के अलावा भी कई ग्रन्थों में पारद श्रीयन्त्र स्थापना विधि भव्यता के साथ अंकित है, पर दुर्भाग्यवश इनमें से अधिकांश ग्रन्थ हस्तलिखित हैं, हम उनमें से साधकों के लिए संक्षिप्त पारद प्रयोग मन्त्र दे रहे हैं, जिसका उपयोग वे कर सकते हैं।

पारद प्रयोग मन्त्र

किसी भी बुधवार या शुक्रवार को अथवा दीपावली के दिन या इससे पहले के आठ दिनों में किसी भी दिन शुद्धता से स्नान कर पूजा स्थान में पीला वस्त्र बिछा कर उस पर पारद श्रीयन्त्र स्थापित करें, सामने अगरबत्ती, दीपक लगाएं, और **"कमलगट्टे की माला"** से निम्न मन्त्र की एक माला फेरें, इसके बाद भी यदि नित्य पूजा में इस मन्त्र का १०८ वार उच्चारण किया जाय, तो वास्तव में ही अपने आपमें अद्वितीयता प्राप्त होती है।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं पारद श्रीयन्त्राय
श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ।।

यह मन्त्र अपने आपमें तेजस्वी और अचूक हैं, धनत्रयोदशी अर्थात् इस वर्ष **३-११-९१** को **एक हजार कमलबीजों** से इस मन्त्र के द्वारा आहुति दे कर पारद श्रीयन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न किया जा सकता है।

कैसे प्राप्त करें ?

आपको अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, लौटती डाक से ही पत्र में स्पष्ट शब्दों में लिख भेजें, कि आप अपने घर में पारद श्रीयन्त्र स्थापित करना चाहते हैं, यदि आप पत्रिका सदस्य हैं, तो आपको २४०)रु० की छूट दे कर मात्र ३६०)रु० में ही यह श्रीयन्त्र वी०पी० से भेजने की व्यवस्था की जा सकेगी, पर इस बात का ध्यान रहे कि श्रीयन्त्र होने की स्थिति में ही भेजने की व्यवस्था होगी।

वास्तव में ही इस बार का दीपावली पर्व इस पारद श्रीयन्त्र की वजह से आपके जीवन का जगमगाता हुआ पर्व बने, ऐसा ही हमें विश्वास है। ●

हम धनवान क्यों नहीं हैं

क्योंकि

हमने लक्ष्मी की साधना को सही ढंग से जाना ही नहीं

क्या गरीबी पूर्ण रूप से हट सकती है ? क्या इसमें लक्ष्मी साधना का ही योगदान है ? लक्ष्मी साधना के क्या नियम हैं ? —ये प्रश्न हर साधक के मन में उठते हैं ।

इसी से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्याख्या, वैज्ञानिक विवेचन, प्रयोगात्मक उपाय पहली बार ।

मनुष्य की सारी भाग-दौड़ का केन्द्र बिन्दु लक्ष्मी-प्राप्ति ही है, सामान्य तौर पर लक्ष्मी से तात्पर्य धन प्राप्ति माना जाता है, जो कि गलत है, धन-प्राप्ति लक्ष्मी का सबसे बड़ा स्वरूप अवश्य है, यह धन की अधिष्ठात्री देवी है, जिसके बिना संसार का कोई भी काम-काज नहीं चल सकता, मनुष्य तो क्या देवताओं को भी अपने देवत्व कार्य हेतु लक्ष्मी की आराधना करनी ही पड़ती है, इन्द्र भी लक्ष्मी कृपा पर आश्रित हैं, जगत पालनकर्ता श्री विष्णु भी लक्ष्मी के सहयोग से यह कार्य करते हैं।

लक्ष्मी के स्वरूपों की गणना करना संभव ही नहीं है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्मी का प्रभाव है, यह धन के अतिरिक्त यश अर्थात् प्रसिद्धि, उन्नति, कामना पूर्ति की देवी है, यह सौभाग्य, सुन्दरता, श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन, सहयोग की देवी है, जिनकी कृपा बिना गृहस्थ जीवन, पारिवारिक जीवन सही रूप से चल ही नहीं सकता, इसीलिए हमारे शास्त्रों में पत्नी को गृह लक्ष्मी कहा गया है, लक्ष्मी भोग की अधिष्ठात्री देवी है, इसकी सिद्धि से ही जीवन में भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है।

एक सामान्य सा उदाहरण है, कि हम किसी को आदर देते हैं, तो उसके नाम के आगे 'श्री या श्रीमान्' शब्द का सम्बोधन करते हैं, 'श्री' का अर्थ है लक्ष्मी, और श्रीमान् का अर्थ है, लक्ष्मी युक्त, अतः यह स्पष्ट है, कि जो 'श्री' सम्पन्न है, लक्ष्मीवान है, वही सम्माननीय है, चाहे वह योगी हो, साधु हो, अथवा कोई श्रेष्ठ पुरुष।

हम गरीब क्यों हैं ?

कुछ धारणाएं हमारे मन में इस प्रकार बिठा दी गई हैं, कि हम उनका बिना विवेचन किये अनुसरण करते जाते हैं, इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है कि अधकचरे शास्त्रों में धन को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बताया गया है, जब कि इससे बड़ा कोई असत्य हो ही नहीं सकता, धन तो मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है, जो कायर हैं, नपुंसक हैं, आलसी हैं, वे ही धन की निन्दा करते हैं, जो स्वयं कुछ नहीं कर सकते, वे ही इसकी निन्दा करते हैं, धन के विना न तो बड़े-बड़े मन्दिर बन सकते हैं, न ही कोई सामाजिक कार्य, धार्मिक कार्य संभव हो सकता है, समाज के लिए वही व्यक्ति कुछ कर सकता है, जो धन से पूर्ण युक्त हो, आश्रम हो चाहे स्कूल, मन्दिर हो अथवा अस्पताल, सबके मूल में धन ही एक मात्र तत्व है, जिसके माध्यम से यह सब संभव है, इस धारणा को मन से पूरी तरह निकालना होगा, तभी लक्ष्मी की सच्चे मन से साधना संभव है, पहले मानसिक गुलामी की इन जंजीरों को तोड़ना ही होगा, पहले मन की इस गरीबी का त्याग करना पड़ेगा।

क्या गरीबी हट सकती है ?

यह प्रश्न, हर व्यक्ति के मन में उठता है, कि क्या मेरी गरीबी, दरिद्रता का नाश हो सकता है ? क्या मैं धनवान हो सकता हूं ? जिससे मैं जीवन की सभी सुख-सुविधाओं का भोग कर सकूं, अपने जीवन को नया स्वरूप दे सकूं, यह पूर्ण रूप से संभव है, इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों को समझना आवश्यक है, केवल परिश्रम से ही कोई धनपति नहीं बन सकता और केवल शिक्षा प्राप्ति से ही लक्ष्मीपति नहीं बन सकता, आज उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुए व्यक्तियों को बेरोजगार देखते हैं, घोर परिश्रम करने वाले मजदूरों को देखते हैं, तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है, एक व्यापारी दिन भर भाग-दौड़ करता है तो भी व्यापार में विस्तार नहीं होता, जब कि दूसरा कम परिश्रम में ही देखते ही देखते व्यापार को बढ़ा लेता है, क्या यह केवल भाग्य का ही खेल है ? ऐसा नहीं है, सम्पन्नता, लक्ष्मी वृद्धि, भाग्य और परिश्रम दोनों के संयोगों का नाम है, और इस सयोग को केवल एक ही विधि द्वारा संयुक्त किया जा सकता है, और वह विधि है, **"लक्ष्मी साधना"।**

'लक्ष्मी तन्त्र' जो कि लक्ष्मी तथा इन्द्र के संवाद का ग्रन्थ है, जिसमें इन्द्र ने लक्ष्मी कृपा का उपाय पूछा है, उसमें लक्ष्मी ने कहा है कि—

शास्त्रीय मा चरन्ने वं नित्य नैमित्ति कान्मकम् ।
मदारा धनकामः संशश्वत् प्रीणाति मां नरः ।।

अर्थात् जो नित्य शास्त्रोक्त विधि से नैमित्तिक कर्म का आचरण करते हुए मेरी आराधना की इच्छा करते हुए साधना करता है, उसी मनुष्य पर मैं पूर्ण रूप से प्रसन्न होती हूं।

गरीबी हटाने का एक मात्र उपाय लक्ष्मी साधना ही है, निश्चित अनुष्ठान से, निश्चित विधि से, सात्विक मन से, पूर्ण प्रीति से जो लक्ष्मी-साधना, अनुष्ठान सम्पन्न करता है, वह अपने जीवन की दरिद्रता को मिटा सकता है, लक्ष्मी-साधना के फलस्वरूप लक्ष्मी के ५१ स्वरूपों के समग्र लाभ स्वतः ही मिलने लग जाते हैं, क्योंकि लक्ष्मी केवल एक रूप में प्रसन्न नहीं होती, उसकी कृपा तो साधक को सम्पूर्ण रूप से प्राप्त होती है, और उसके सभी स्वरूपों का आनन्द उसे मिलता ही है।

लक्ष्मी साधना के अनेक विधान हैं, जिससे सामान्य साधक भ्रमित हो जाता है, उसे समझ में

नहीं आता कि वह साधना क्रम कहां से प्रारम्भ करे ? उसकी प्रामाणिक विधि क्या है ? यह प्रश्न गूढ़ नहीं हैं, इसे जटिल बना दिया गया है, जो साधक किसी दूसरे ब्राह्मण से पूजा करवा कर, अनुष्ठान करना चाहता है, उससे हजार गुना अधिक लाभ स्वयं पूजा-साधना करने से प्राप्त होता है।

पत्रिका साधकों हेतु कुछ सरल उपाय आगे स्पष्ट किये जा रहे हैं, जिन्हें नियमित रूप से सम्पन्न अवश्य करना चाहिए, पूरे परिवार में लक्ष्मी आराधना, साधना, सम्पन्न होनी चाहिए—

१- बीजात्मक लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रथम प्रयोग है, जो लक्ष्मी के उद्भव को जागृत करता है, जहां घोर दरिद्रता का निवास हो, वहां सर्वप्रथम यही अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए, जब लक्ष्मी प्रगट होगी तभी तो विस्तार संभव है, यह प्रयोग कार्तिक मास के किसी भी दिन प्रारम्भ किया जा सकता है।

पूजा के प्रथम दिवस को साधक स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपने सामने लक्ष्मी चित्र पर पुष्पाहार चढ़ाएं, अगरबत्ती और घी का दीपक जला कर सामने **बीजात्मक लक्ष्मी स्वरूपा यन्त्र** स्थापित करें, उसके चारों कोनों पर केसर से चार बिन्दी लगायें, और तत्पश्चात् स्वयं के तिलक करें, अपने हांथ में जल ले कर अपने कुलदेवता को साक्षी रखते हुए संकल्प करें कि,— "मैं अपनी दरिद्रता को दूर करने हेतु बीजात्मक लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर रहा हूं, लक्ष्मी बीज स्वरूप में मेरे घर में प्रवेश करें।"

अब साधक बीजात्मक लक्ष्मी मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक-एक **'मन्त्र सिद्ध कमलबीज'** इस यन्त्र पर अर्पित करें, इस प्रकार १०८ **कमलबीज** का अर्पण करना है।

लक्ष्मी बीज मन्त्र

।। ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ।।

अब अपने हाथ में लाल पुष्प ले कर लक्ष्मी को अर्पित करें, तथा पुनः अपने आसन पर बैठ कर चार माला का जप और करें, मन्त्र जप पूरा हो जाने के पश्चात् लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें।

लक्ष्मी बीज मन्त्र का जप एक माला तो प्रतिदिन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, ऐसा प्रयोग करने से स्पष्ट परिणाम शीघ्र प्राप्त होता है, लक्ष्मी का उद्भव होने लगता है और जब लक्ष्मी का उद्भव होता है तो दरिद्रता का नाश होना प्रारम्भ होता है।

२- ज्येष्ठा लक्ष्मी अनुष्ठान

'शारदा तिलक' में लिखा है, कि आद्या शक्ति लक्ष्मी की वृद्धि हेतु ज्येष्ठा लक्ष्मी जैसा सुन्दर एवं श्रेष्ठ कोई उपाय ही नहीं है, यदि त्रैलोक्य मोहिनी गौरी को सिद्ध करना है, तो ज्येष्ठा लक्ष्मी अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए, इसकी आठ शक्तियां साधक के जीवन में आठ प्रकार के फल प्रदान करती हैं।

किसी भी बुधवार को यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है, और उस दिन प्रातः जल्दी उठ कर पहले अपना नित्य पूजा क्रम सम्पूर्ण कर गुरु मन्त्र की एक माला का जप कर यह विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

स्वयं में कर्म शक्ति जागृत कर लक्ष्मी वृद्धि करने का यह अनुष्ठान अनोखा है, इस अनुष्ठान को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति अपने स्वयं के बलबूते पर लक्ष्मी सिद्धि प्राप्त करता है, वृद्धि करता है, बुधवार के दिन प्रातः अपने सामने **मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त ज्येष्ठा लक्ष्मी यन्त्र** एक पात्र में स्थापित करें, इसमें सर्वप्रथम आठ शक्तियों का पूजन होता है, इन आठ शक्तियों की सिद्धि हेतु **'आठ शक्ति चक्र'** इस पात्र के चारों ओर स्थापित करें और प्रत्येक शक्ति का पूजन कुंकुम, केसर, चावल तथा पुष्प से

सम्पन्न करें।

ये आठ शक्तियां—लोहिताक्षी, विरूपा, कराली, नीललोहिता, समदा, वारूणी, पुष्टि, अमोघा हैं।

प्रत्येक का पूजन कर मध्य में स्थित **ज्येष्ठा लक्ष्मी यन्त्र** पर एक **वक्ष्य मान चक्र** स्थापित कर ज्येष्ठा लक्ष्मी-विश्व मोहिनी, का पूजन सम्पन्न करें, स्वयं के तिलक लगा कर पांच पुष्पों का अर्पण सम्पन्न करें, और फिर धूप दीप से पूजन सम्पन्न करें, ज्येष्ठा लक्ष्मी का मन्त्र, साधक स्वयं उसी स्थान पर बैठे-बैठे **कमलगट्टे की माला** से सम्पन्न करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं आद्यलक्ष्मी स्वयं भुवै
ह्रीं ज्येष्ठायै नमः ।।

इस प्रकार पांच मालाएं मन्त्र जप पूरे हो जाने के पश्चात् अपना स्थान छोड़ें और अगले बुधवार को पुनः यह प्रयोग सम्पन्न करें, पूर्ण सिद्धि सात बुधवार तक प्रयोग सम्पन्न करने से ही प्राप्त होती है, ज्येष्ठा लक्ष्मी धन में वृद्धि, विस्तार की देवी है, और इसकी साधना से जीवन में, कार्यों में आर्थिक वृद्धि होती ही है।

३- इन्द्रकृत धनदा प्रयोग

लक्ष्मी के साधकों में इन्द्र का नाम सबसे ऊपर है, लक्ष्मी कृपा से ही इन्द्र देवताओं के अधिपति हैं, और सभी सुख प्राप्त हैं, धनदा प्रयोग, इन्द्रकृत लक्ष्मी प्रयोग है, जिसको सम्पन्न करने से साधक लक्ष्मी-कृपा से इन्द्र के समान शक्ति प्राप्त करने में समर्थ रहता है, इस विशेष प्रयोग से लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है, वाणी सिद्धि तथा लक्ष्मी सिद्धि का इससे अधिक सुन्दर कोई प्रयोग नहीं है।

शुभ मुहूर्त में प्रसन्न मन से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, निश्चित प्रयोग दिवस के दिन साधक पूर्ण रूप से प्रसन्न मन से अपने सामने **इन्द्राक्षी धनदा यन्त्र** स्थापित करें, इस साधना में यन्त्र के चारों ओर आठ दिशाओं में धनदा के **आठ शक्ति तन्त्र हेम्भोज** स्थापित करें और ये मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हेम्भोज धनदा लक्ष्मी के आठ स्वरूप लक्ष्मी, पद्मालया, हरिप्रिया, कमला, अब्जा, चंचली, ललिताक्षी, विमला के स्वरूप हैं, और इन सभी स्वरूपों की सिद्धि साधक को प्राप्त होती है।

सर्वप्रथम धनदा देवी का ध्यान करते हुए, अपने हाथ में जल लेकर अपनी विशेष कामना-पूर्ति, सिद्धि हेतु सकल्प बोलें, यहां साधक अपनी विशेष कामना को अष्टगन्ध से एक कागज में लिख कर धनदा यन्त्र के नीचे अवश्य रखें, केवल कुंकुम और पुष्प से आठ शक्तियों का पूजन करें।

ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ पद्मालयायै नमः, ॐ हरिप्रियायै नमः, ……………………यथा।

अब साधक धनदा देवी को नैवेद्य अर्पित करें तथा इस विशेष अनुष्ठान में आवश्यक **'रतिप्रिया सिद्ध माला'** से मन्त्र जप सम्पन्न करें।

धनदा मन्त्र

।। धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा ।।

'इन्द्र संहिता' के अनुसार पांच हजार मन्त्र जप इस विशेष माला से सम्पन्न करने से साधक की सभी अभिलाषाएं, इच्छाएं पूर्ण होती हैं, अतः साधक को अपने अनुष्ठान क्रम को इस प्रकार निर्धारित करना चाहिए, कि वह एक मास में पाँच हजार मन्त्र जप अवश्य ही सम्पन्न कर दे।

पूजन का यह विधान सम्पन्न कर यह माला अपने गले में धारण कर ले, इस प्रकार आराधना करने से लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों का ही घर में स्थायी निवास होता है और इन्द्र के समान सम्पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं, समस्त मनोकामना निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

ऊपर दिये गये तीनों प्रयोग लक्ष्मी साधना के, अटूट फल प्राप्ति के सरल प्रयोग हैं, जिन्हें लक्ष्मी कृपा के इच्छुक साधक को अवश्य ही सम्पन्न कर अपने जीवन को नया स्वरूप देना चाहिए। ●

रोगों से लड़ाई दवा से संभव नहीं

अपितु

संभव है

कायाकल्प

धन्वन्तरी प्रयोग से

शरीर तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त सबसे सुन्दर उपहार है, शास्त्र भी कहते हैं, पहला सुख 'निरोगी काया' स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन-मस्तिष्क का निवास होता है, यदि शरीर में कोई पीड़ा, बाधा अथवा वक्रता है, तो मस्तिष्क उसी के बारे में चिन्तन करता रहता है, शरीर से परे बहुत कुछ अवश्य है, लेकिन इस 'बहुत कुछ' को रखने के लिए, गति देने के लिए शरीर स्वस्थ होना आवश्यक ही है।

रोग मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं, जिनके रहते वह कुछ भी नहीं कर सकता, उसका चिन्तन, मनन, इच्छा, सब खण्डित हो जाते हैं, यह शत्रु उसके साथ चिपका रहता है, वह कितने ही एकान्त में क्यों न चला जाय, ये शत्रु तो साथ ही साथ चलता है, रुग्ण शरीर से ही रुग्ण मानसिकता का जन्म होता है, और रुग्ण मानसिकता, बिनाश, हानि की ओर बढ़ते हुए कदम हैं, मन की गति तो बहुत तीव्र है, वह बहुत कुछ प्राप्त करना चाहता है, लेकिन मन की गति को तन की बाधाएं अर्थात् रोग रोक देते हैं, इसीलिए जो व्यक्ति अपने शरीर की पूजा नहीं करता, जो इसे पूर्ण रूप से स्वस्थ, सुन्दर, बनाये रखने के लिए उपाय नहीं करता, वह खुद का तो नाश करता ही है, वह भगवान का भी अपमान करता है, उनके दिये गये उपहार को प्रत्यक्ष रूप से ठुकराता है।

धन्वन्तरी और काया कल्प

जब अमृत प्राप्ति हेतु समुद्र मंथन के समय अपने हाथ में अमृत कलश लिये हुए एक दिव्य कांतियुक्त, सम्पूर्ण अलंकरणों से सुसज्जित, सर्वांग सुन्दर, तेजस्वी अलौकिक पुरुष प्रगट हुए, यह अलौकिक पुरुष **भगवान धन्वन्तरी** के नाम से विख्यात हुए, इनकी उत्पत्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हुई थी, और भगवान विष्णु के अंश माने जाते हैं।

उस समय से ही यह तिथि धन्वन्तरी जयंती **के रूप में आरोग्य सिद्धि के रूप में, मनाई जाती है, विष्णु**

के २४ अवतारों में भगवान धन्वन्तरी की गणना की गई है, विष्णु के अंश होने के प्रमाण स्वरूप श्रीमद्भागवत में लिखा है—

स वै भगवतः साक्षात् विष्णारंशांशसम्भवः ।
धन्वन्तरिरिति ख्यात आयुर्वेददृगिज्यभाक् ।।

अर्थात् विष्णु के अंश ही धन्वन्तरी हैं, जिन्होंने शरीर से सम्बन्धित शास्त्र **आयुर्वेद** की रचना की, भगवान धन्वन्तरी ने लोक कल्याण हेतु एक महाग्रन्थ की रचना की जिसे **"धन्वन्तरी संहिता"** कहा जाता है, जिसमें पूरे शरीर विज्ञान की वैज्ञानिक विवेचना करते हुए उससे सम्बन्वित विशद वर्णन है, इसमें लिखा है सोलह कलाओं से युक्त ऐश्वर्यशाली, ज्ञानवान पुरुष, जिसे योगी कहा जा सकता है, वह वही हो सकता है जो शरीर से पूर्ण रूप से स्वस्थ हो, जिसमें कोई दोष न हो और **'अणिमा सिद्धि'** से युक्त हो, स्वस्थ व्यक्ति वही है, जिसकी इन्द्रियां उसके वश में हों, और उसका शरीर उसकी इच्छा के अनुसार चले ।

पत्रिका कार्यालय में पूज्य गुरुदेव के नाम से जितने पत्र आते हैं उनमें से अधिकतर पत्रों में शरीर की किसी न किसी बाधा का जिक्र अवश्य होता है, किसी को पेट से सम्बन्धित कई वर्षों से पीड़ा है, तो किसी का चेहरा सुन्दर नहीं है, कोई श्वेत दाग से पीड़ित है, तो किसी के चेहरे पर कांति नहीं है, कोई शक्तिहीनता से पीड़ित है, तो किसी को स्मरण शक्ति, एकाग्रता की बाधा है, कोई शरीर पीड़ा से ग्रस्त है, तो कोई मानसिक पीड़ा से दुखी है, ४० वर्ष की उम्र में ही बुढ़ापे के लक्षण उत्पन्न होने लग गये हैं, तो कोई इच्छाहीन और जीवन से निराश प्रतीत हो रहे हैं ।

ऐसा क्यों होता है ? इस प्रश्न पर विचार करना भी उतना ही आवश्यक है, इस शरीर को तो बाण की तरह तीव्र, तेजस्वी रखना आवश्यक है, 'शरीर-साधना' ही साधक को श्रेष्ठता की ओर प्रवृत्त करती है, धन्वन्तरी जयन्ती अपने आपमें विशेष सिद्ध मुहूर्त है, इस दिन पीड़ा ग्रस्त व्यक्ति को कुछ प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए, जिससे उसके पूर्ण रूप से स्वस्थ, सुन्दर, निरोगी होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सके, और यह प्रक्रिया ही 'काया कल्प' प्रक्रिया है, जिसमें हम अपनी काया को नवीन रूप प्रदान कर सकते हैं ।

स्वस्थ शरीर—अष्टविध ऐश्वर्य

जब शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाता है, उसके सभी प्रकार के विकार नष्ट हो जाते हैं, तो वह व्यक्ति योगी बन जाता है, और उसे अष्टविध ऐश्वर्य अपने आप प्राप्त हो जाता है, अष्टविध ऐश्वर्य हैं—

१- आवेश–सूक्ष्म शरीर द्वारा दूसरे शरीर में प्रवेश करना, २- छन्दतः क्रिया–प्राणी-पदार्थों को वश में कर लेना, ३- चेतन ज्ञान–दूसरों के विचार को जान लेना, ४- इष्टतः दृष्टि–इच्छानुसार देखना, ५- इष्टतः श्रौत-इच्छानुसार सुनना, ६- इष्टतः स्मृति –इच्छानुसार स्मरण करना, जन्मान्तरों का स्मरण करना, ७- इष्टतः कान्ति–इच्छानुसार स्वरूप धारण कर लेना और ८-इष्टतः अदर्शन–इच्छानुसार अदृश्य होना ।

ये सब क्रियाएं असंभव नहीं है, इनके लिए तो शरीर का निर्माण श्रेष्ठ रूप से करना आवश्यक है, शरीर की शुद्धि आवश्यक है, बुद्धि की शुद्धि आवश्यक है ।

इस धन्वन्तरी जयन्ती पर कुछ विशेष साधना प्रक्रिया प्रारम्भ कर काया कल्प किया जा सकता है, पाठकों हेतु आगे कुछ विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर वे निश्चय ही श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकते हैं, काया कल्प प्रक्रिया सम्पन्न कर सकते हैं ।

पंच कूटात्मक इन्द्रजिद्

धन्वन्तरी ऋषि ने अपने विशेष आयुर्वेद, रसायन, साधनात्मक शक्ति से इसके निर्माण की विशेष प्रक्रिया को अपने ग्रंथ में स्पष्ट किया है, बालक सामान्य तौर पर प्रकृति का दबाव झेल नहीं सकते हैं, उन्हें बीमारी, पीड़ा की बाधा का प्रभाव अधिक पड़ता है, इसके अतिरिक्त कई बालकों की बुद्धि का तीव्रता से विकास नहीं हो पाता, शारीरिक दृष्टि से निर्बल रहते हैं, अथवा अपनी शिक्षा की दृष्टि से स्मरण शक्ति की दृष्टि से कमजोर रहते हैं, उनके लिए यह **'पंच कूटात्मक इन्द्रजिद्'** वरदान के समान है।

इसकी रासायनिक प्रक्रिया अत्यन्त कठिन है, तावीज के आकार के इस गंडे के निर्माण की प्रक्रिया में विजया तलवार की धातु का प्रयोग कर उसे कल्पहार के पुष्प के दूध के साथ कोरंठ के फूलों का रस मिला कर धीमी आंच में पका कर पारस संस्कार कर मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करना होता है, और फिर इसे इस तावीज में भर कर प्रयोग किया जाता है।
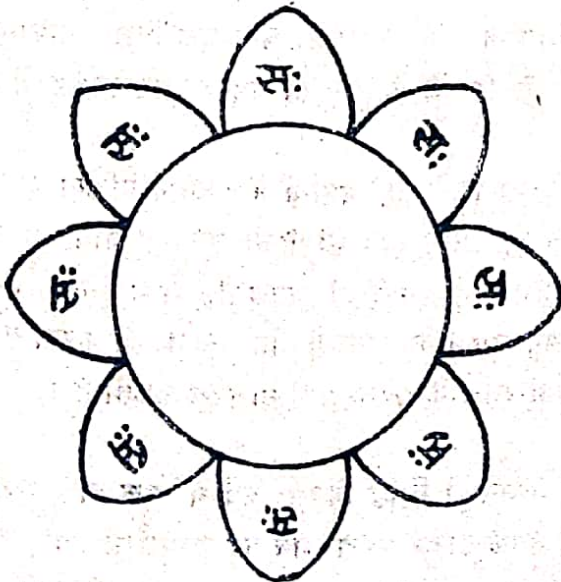
बाल रक्षाकर यन्त्र

जो भी बालक इसे धारण करता है, उसके रोग भाग जाते हैं और शरीर में स्वस्थता, कान्ति आने लगती है, वास्तव में धन्वन्तरी का यह वरदान बालकों के लिए जीवनदायी है, यदि कोई बालक शिक्षा की दृष्टि से कमजोर है, भूत-पिशाच का भय है, भय से रात्रि में बिस्तर गीला कर देता है, अथवा अन्य किसी भी प्रकार की भी बाधा हो, तो यह **पंच कूटात्मक इन्द्रजिद्** धारण कराना चाहिए, विशेष बात यह है कि इसमें बालक को कोई मन्त्र जप अनुष्ठान नहीं करना पड़ता, क्योंकि यह इन्द्रजिद् अपने आपमें पूर्ण प्रक्रिया से तांत्रिक एवं मान्त्रिक प्रयोग से सिद्ध होता।

विष्णु तेजस सिद्ध कंकण

जैसा खान पान चल रहा है और जिस प्रकार की विचारधारा का प्रवाह है, उस कारण सामान्य तौर पर युवकों के चेहरों पर एक मुर्दनी सी छाई रहती है, न तो चेहरे पर तेज दिखता है और न ही आत्मविश्वास और कुछ नया करने की इच्छा ही रहती है, एक लीक पकड़ कर चल रहे हैं, तो चलते ही जाते हैं, क्या यह उचित है?

युवावस्था को मैं बीस वर्ष से ४५ वर्ष की उम्र तक गिनता हूं, इस समय तो उसमें जूझने की असीम क्षमता होनी चाहिए कि वह पूरे आत्मविश्वास के साथ कार्य कर अपनी राह बनाये, अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार मोड़ सके, ऐसा संभव है, इसमें कोई नई बात नहीं है, भगवान धन्वन्तरी ने अपने ग्रंथ में लिखा है, कि कलियुग में युवा भी वृद्ध के समान शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से आचरण करेंगे।

"विष्णु तेजस सिद्ध कंकण" इन सभी बाधाओं को दूर करने का विशेष उपाय है, अष्ट धातु से बना यह कड़ा यदि कोई धारण कर लेता है, तो उसे जीवन में कोई भी कार्य असंभव अथवा कठिन नहीं मालूम पड़ता, जिस काम में भी हाथ डालता है, उसमें सफलता प्राप्त करता है, चेहरे पर एक तेज सा आ जाता है और उसमें

आकर्षण शक्ति पूर्ण रूप से समाहित हो जाती है, विष्णु तेजस सिद्ध कंकण धारण किये हुए व्यक्ति के शरीर में एक ऊर्जा निरन्तर प्रवाहित होती रहती है, जिससे उसका शरीर रोग रहित सुन्दर आकर्षक बन जाता है, तथा उसके कार्य सफल होते हैं।

इसके निर्माण की प्रक्रिया विचित्र है, अष्ट-धातु को, बन्धूक वृक्ष की जड़ को, लाल कनेर के फूलों के रस के साथ पका कर उसमें अपराजिता द्रव्य डाले फिर नौ पात्रों में अलग-अलग रसायन के साथ इसे पका कर सुखाना पड़ता है, जब यह धातु कठोर हो जाती है तब इससे कंकण का निर्माण किया जाता है, ये नौ पात्र हैं —गुरु पात्र देव पात्र, श्रीपात्र, योगिनी पात्र, भोग पात्र, वीर-पात्र, आत्म पात्र, कल्याण पात्र और बली पात्र।

जो इस तेजस कंकण को निर्माण कर धारण कर ले उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मान कर अपने पास रखना चाहिए, अपने प्रिय से प्रिय को इसे न दे, क्योंकि इसी के द्वारा साधक के जीवन में स्वस्थता, सुन्दरता, सिद्धि और सफलता की प्रक्रिया बन सकती है।

मायादिकाम् मुद्रिका

स्त्रियों का प्रधान गुण सुन्दरता और आकर्षण ही हैं, यदि ये दोनों गुण उसमें नहीं हैं, तो उसके जीवन में निराशा ही रहती है, स्त्री के शरीर की सुन्दरता के सम्बन्ध में हजारों ग्रन्थ लिखे गये हैं, एक-एक अग की विशेष व्याख्या की गई है, धन्वन्तरी ऋषि के अनुसार— स्त्रियों के चेहरे और शरीर दोनों में पूर्ण आकर्षण होना चाहिए, शरीर स्वस्थ रहना चाहिए, जिससे कि वह अपने आकर्षण के बल पर अपनी शक्ति को स्थापित कर सके, स्वस्थ सतान को जन्म दे सके, शक्ति तथा लक्ष्मी दोनों का उसमें वास हो सके।

जो स्त्री **"मायादिकाम् मुद्रिका"** धारण करती है, उसके शरीर की रचना **"जैसे मूर्तिकार काष्ठ को तराश कर मूर्ति की रचना करता है"**, शरीर से दोष इस प्रकार चले जाते हैं, जैसे अग्नि के प्रभाव से जल वाष्प बन कर उड़ जाता है।

इसके निर्माण में रांगा, शीशा, जस्ता, रजत तथा ताम्र को एक विशेष खरल में पीस कर चूर्ण रूप में बना कर इसमें राई पुष्प, चन्दन, प्रियंगु, नागकेसर, मैनसिल, तगर, के मिश्रण के साथ नीम की समिधाओं से प्रदत्त अग्नि के साथ पका कर शुद्ध किया जाता है, फिर इसका पारद संस्कार सम्पन्न एक ढेले के रूप में धातु बना कर उस धातु से मुद्रिका का निर्माण किया जाता है।

यह मुद्रिका कठोर एवं रत्न रहित रूप में ही धारण करनी चाहिए जो स्त्री शुक्रवार के दिन स्नान कर श्रेष्ठ आभूषणों सहित सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित हो कर अपने पूजा कक्ष में कामेश्वरी ध्यान सम्पन्न कर इस मुद्रिका को धारण करती है, तो उसके शरीर से दोष लुप्त हो जाते हैं, रंग परिवर्तित होने लगता है, सौन्दर्य की नवीन प्रतिमा का निर्माण होने लगता है, और एक विशेष आकर्षण छा जाता है, स्त्रियों के लिए तो यह वरदान स्वरूप ही है।

ऊपर लिखे सारे प्रयोगों में रसायन प्रक्रिया का विशेष महत्व है, इसमें यदि थोड़ी सी भूल रह जाय तो उसका पूर्ण प्रभाव ही नष्ट हो जाता है, अतः इनका निर्माण रसायन शास्त्र के ज्ञाता के निर्देशन में ही करना चाहिए, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

धन्वन्तरी सिद्धि दिवस वर्ष में एक बार आता है, और उनके द्वारा प्रवत्त ज्ञान पर आधारित इन वरदायक चैतन्य वस्तुओं को धारण कर कायाकल्प संभव है, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। ●

केवल कार्तिक मास के अन्तिम पांच दिनों में

साक्षात्

यौवनांगी

त्रिपुर मदनाक्षी अप्सरा

को उतारा जा सकता है इस धरा पर

और साधक जिसे वश में कर सकता है

पूरे जीवन भर के लिए

सामान्य तौर पर व्यक्ति दोहरी जिन्दगी जीता है, उसके बाहरी हाव-भाव, व्यवहार, वेष-भूषा को देख कर उसके आन्तरिक विचारों के बारे में अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन है, व्यक्ति चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री, सामाजिक नियमों के अन्तर्गत चलते हुए, समाज में रहते हुए उसे अपनी भावनाओं को दबाना पड़ता है, इच्छाओं को बार-बार मारना पड़ता है, बेमेल जोड़े बनते हैं, कहीं न तो पति को पत्नी से वास्तविक दृष्टि से प्रेम है, और न ही पत्नी को पति से, पर निभाये चले जा रहे हैं एक दूसरे के साथ एक दिखावा करते हुए, इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी, कि इस समाज में व्यक्ति अपने प्रेम भाव को, अपनी इच्छाओं को, अपने आकर्षण को, अपनी कामनाओं को, अपने विचारों को स्पष्ट रूप से बता ही नहीं सकता, मन ही मन ताने बाने बुनता है, और तिनकों की नगरी बसाता है।

आखिर प्रेम क्या है ?

प्रेम बाजार में मिलने वाली वस्तु तो है नहीं, प्रेम धन कमा कर, धन को खर्च कर, सुन्दर घर बना कर, प्राप्त नहीं किया जा सकता, ये सब तो सुविधाएं हैं, जिन्हें प्राप्त किया जा सकता है।

प्रेम तो वह दिव्य भाव है, जो स्वतः ही उत्पन्न होता है, यह प्रेम किसी के प्रति भी हो सकता है, और प्रेम का पहला अध्याय है आकर्षण, यदि प्रेम है तो आकर्षण बल के द्वारा वह अपने आपको खींच लेगा, यह प्रेम स्वयं की पत्नी के प्रति हो सकता है, किसी अन्य स्त्री के प्रति हो सकता है, किसी मित्र के प्रति हो सकता है, अपने गुरु के प्रति हो सकता है, जहां मन को प्यास का अनुभव हो, जहां मन की सभी सुप्त शक्तियां जागृत हो उठें, वहां समझो प्रेम प्रकट हो गया।

प्रेम में बड़ी शक्ति होती है, और यह शक्ति साधारण व्यक्ति को महामानव बना सकती है, और प्रेम कामवासना से जुड़ा हुआ नहीं है, वह क्रिया तो एक शारीरिक क्रिया है, जब कि प्रेम तो पूरे कुण्डलिनी चक्र को जागृत कर देने की क्रिया है, भाव है, जो साधनाएं प्रेम भाव से करने के लिए होती हैं, उन्हें इसी श्रेष्ठ भाव के साथ सम्पन्न करना चाहिए, जब प्रेम प्रगट हो जायेगा, तो वह दूसरे को आपकी ओर अवश्य ही खींच लेगा।

प्रेम-साधना में एक शक्ति भाव, अधिकार भाव जुड़ा रहता है, जिसमें इच्छा शक्ति का प्रधान स्थान है, रो-रो कर दीनता से कोई भी साधना नहीं की जा सकती, प्रेम आपका अधिकार है, और इसे इसी रूप में प्राप्त करना आवश्यक है।

सौन्दर्य साधना—अप्सरा साधना

सामान्य रूप से इस साधना के प्रति बड़ी ही भ्रान्ति फैली हुई है, कई साधक छिप कर यह साधना सम्पन्न करते हैं, कई साधिकाएं पूछती हैं कि क्या हम साधना कर सकती हैं? कई साधक आशंका करते हैं कि क्या इससे हमारे वैवाहिक जीवन पर कोई असर पड़ेगा? इत्यादि-इत्यादि।

सौन्दर्य की साकार प्रतिमा, जिन में देवताओं की शक्ति का अंश-आकर्षण भरा है, वे भोग की वस्तुएं नहीं हैं, प्रेम से उन्हें अपना कर अपना सहयोगी बनाने की साधना है, और जो कार्य आपका सच्चा मित्र कर सकता है, जिस प्रकार आप खुल कर अपने मित्र से व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार अप्सरा साधना में भी एक प्रिय भाव, मित्र भाव रहता है, और यह प्रियता-मित्रता ही आपको अपना पूर्ण सहयोग देती है, इस सहयोग के पीछे न तो कोई वासना है, न ही अपने से अलग समझने की स्थिति, यह तो भीतर ही भीतर शक्ति जागृत कर, अप्सरा की शक्ति प्राप्त कर एक श्रेष्ठता प्राप्त करने की सुन्दर, आनन्द युक्त प्रक्रिया है।

सहायता किसी सहयोगी से मांगी जा सकती है, और सच्चा सहयोगी ही संकट, पीड़ा, बाधा के समय अपना पूर्ण सहयोग दे कर मित्रता को मजबूत बनाता है, इसी में मित्रता की सार्थकता है।

त्रिपुर मदनाक्षी अप्सरा

रम्भा, ऊर्वशी, मेनका, तिलोत्तमा, सुकेशी, इत्यादि अप्सराओं के सम्बन्ध में उल्लेख बहुत सारे ग्रन्थों में तोड़-मरोड़ कर आया हुआ है, लेकिन **"त्रिपुर मदनाक्षी"** के सम्बन्ध में बहुत कम वर्णन है, क्योंकि इस साधना की विशेष प्रक्रिया है, इसके कुछ विशेष गुण हैं, और इसकी साधना पूरे वर्ष नहीं की जा सकती।

अन्य देव योनि अप्सराओं से त्रिपुर मदनाक्षी के लक्षण, गुण, अलग हैं, जिनमें मुख्य इस प्रकार से हैं—

१–त्रिपुर मदनाक्षी की उत्पत्ति चौदह रत्नों से पहले मानी जाती है, और यह लक्ष्मी तत्व युक्त अप्सरा है।

२–रूप-सौन्दर्य में अन्य अप्सराओं से पूर्णतः अलग है, इसीलिए इसे सर्वांग सुन्दरी माना जाता है।

३–त्रिपुर मदनाक्षी में इच्छानुसार रूप परिवर्तन

की विशेष शक्ति है, अतः यह किसी भी रूप में प्रकट हो सकती है।

४- त्रिपुर मदनाक्षी में त्रैलोक्य आवागमन की अबाध शक्ति है, इस कारण यह अपने सहयोगी साधक के आह्वान पर कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय आ सकती है।

५- लक्ष्मी तत्व प्रधान होने के कारण यह साधक को धन प्राप्ति के नये उपाय प्रकट करती है, आकस्मिक धन प्राप्ति, गड़े हुए धन के ज्ञान हेतु इसकी साधना विशेष रूप से की जाती है।

६- त्रिपुर मदनाक्षी काम स्वरूपा अप्सरा है, और इसकी सिद्धि साधक के व्यक्तित्व में काम भाव पूर्ण रूप से भर देती है, जिससे उसका सौन्दर्य, सहस्र गुना हो जाता है।

७- दूर श्रवण और परचितानुसंधान अर्थात् दूसरों के मन की बात जानने की सिद्धि केवल त्रिपुर मदनाक्षी साधना से ही प्राप्त हो सकती है।

८-सन्यासी साधकों के लिए यह साधना पूर्णतया वर्जित है।

कार्तिक मास के अंतिम पांच दिन

पूरे वर्ष में केवल इन पांच दिनों में अर्थात् कार्तिक शुक्ल दशमी से कार्तिक पूर्णिमा **(१७-११-९१ से २१-११-९१ तक)** ही त्रिपुर मदनाक्षी साधना सम्पन्न की जा सकती है, कार्तिक पूर्णिमा के दिन तक विशेष अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, और उसी समय स्पष्ट होता है कि साधना का प्रभाव फल क्या हुआ।

यह साधना साधक अकेले बैठ कर ही सम्पन्न करें, और जहां तक संभव हो, एकान्त स्थान में सम्पन्न करनी चाहिए, और साधना के सम्बन्ध में किसी से चर्चा नहीं करनी चाहिए, सिद्धि प्राप्त होने से पूर्व ही साधना के सम्बन्ध में रहस्य प्रकट करने से फल प्राप्ति नहीं होती है।

यह रहस्य साधना पाँच दिन तक सांयकाल, सूर्यास्त के पश्चात् सम्पन्न करनी होती है, एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में छोड़ना नहीं चाहिए, प्रत्येक दिन का अलग मन्त्र व तन्त्र विधान है, उसी के अनुसार कार्य करते रहने की आवश्यकता है।

इस साधना हेतु कुल चार सामग्री आवश्यक हैं—

१-त्रिपुर मदनाक्षी चेतनी गुटिका, २-२१ वाग्भव बीज, ३-आठ अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न, ४-नव चेतन प्राकाम्य, इसके अतिरिक्त साधना में प्रतिदिन पुष्प, चावल (अक्षत), सुपारी, सिन्दूर, काजल, ईत्र, लाल वस्त्र, पुष्प माला आवश्यक है।

पूजा विधान

साधक स्नान कर, सुन्दर वस्त्र पहिने, अपने कपड़ों पर ईत्र इत्यादि सुगन्धित द्रव्य अवश्य लगाएं, अपने सामने एक पात्र में लाल वस्त्र बिछा कर, उसके मध्य में **'त्रिपुर मदनाक्षी चेतनी गुटिका'** स्थापित करें, सुगन्धित धूप दीप जलायें और पूजा स्थान का द्वार बन्द कर साधना प्रारम्भ करें, स्वयं के सिन्दूर का तिलक लगायें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि, "मैं (अपना नाम) अपनी समस्त मनोकामनाओं की सिद्धि हेतु, लाल वस्त्र धारण किये हुए, रत्न आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्न-वदना, अरुण-आभा-युक्त, सुन्दरतम त्रिपुर मदनाक्षी का ध्यान करते हुए, साधना सम्पन्न करता हूं।"

अब साधक ईत्र से मदनाक्षी गुटिका को स्नान कराएं, फिर उसे पुनः स्थापित करते हुए, उस पर सिन्दूर का लेपन करें, तत्पश्चात् सुगन्धित पुष्प चढ़ायें, स्वयं सुगन्धित पुष्पों की माला पहिने।

अब **नव चेतना प्राकाम्य** स्थापित करें और उसके चारों ओर **अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न** रखें, ये रत्न त्रिपुर मदनाक्षी की आठ सहयोगी अप्सराओं के प्रतीक हैं, ये आठ सहयोगी अप्सराएं हैं—

१-उर्वशी, २-मेनका, ३-रम्भा, ४-घृताची, ५-पुंजकस्थला, ६-सुकेशी, ७-मंजुघोषा, ८-महा-

रंगवती, प्रत्येक के आगे एक-एक पुष्प रखते हुए इनका आह्वान करें—

क्लीं उर्वशी आवाह्यामि **क्लीं मेनका आवाह्यामि**
क्लीं रम्भा आवाह्यामि **क्लीं धृताची आवाह्यामि**
क्लीं पुंजकस्थला आवाह्यामि **क्लीं सुकेशी आवाह्यामि**
क्लीं मंजुघोषा आवाह्यामि **क्लीं महारंगवती आवाह्यामि**

अब साधक वीर मुद्रा में बैठ कर २१ वाग्भव बीजों से त्रिपुर मदनाक्षी की शक्ति सोलह योगिनियों और पांच बाणों का आह्वान करें, यह आह्वान साधना में अत्यन्त प्रमुख हैं, इन शक्तियों की स्थापना होने पर जरा, पीड़ा, अपमृत्यु, भय, भूत-प्रेत की बाधा का पूर्ण नाश हो जाता है, और साधना में किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता है, तत्पश्चात् पांच बाणों का आह्वान करना चाहिए, जिससे साधक शक्ति सम्पन्न होने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है, इन सोलह योगिनियों का पूजन निम्न प्रकार से करते हुए, अपने सामने एक-एक वाग्भव बीज स्थापित करना है—

ऐं गजानना नमः ऐ सिंहमुखी नमः
ऐं वाराही नमः ऐं मयूरी नमः
ऐं विकटानना नमः ऐं विकटलोचना नमः
ऐं शुष्कोदरी नमः ऐं सुराप्रिया नमः
ऐं रक्ताक्षी नमः ऐं पाशहस्ता नमः
ऐं प्रचण्डा नमः ऐं चण्डविक्रमा नमः
ऐं पापहन्त्री नमः ऐं तापनी नमः
ऐं विद्युत्प्रभा नमः ऐं कामाक्षी नमः

अब त्रिपुर मदनाक्षी के पांच बाणों का आह्वान किया जाता है, इन बाणों की शक्ति ही मदनाक्षी की शक्ति है—

द्रां द्रावण बाणाय नमः **ब्लूं मोहन बाणाय नमः**
द्रीं शोषण बाणाय नमः **सः उन्मादन बाणाय नमः**
क्लीं तापन बाणाय नमः

इन बाणों का मन्त्र जप होने से साधक में द्रावण, शोषण, तापन, मोहन तथा उन्मादन तत्व आ जाता है, एक सुगन्ध वातावरण में छा सी जाती है, अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए प्रत्येक बाण मन्त्र का ग्यारह-ग्यारह बार जप करना चाहिए।

यह पूजन क्रम पूरा हो जाने के पश्चात् त्रिपुर मदनाक्षी का मन्त्रानुष्ठान सम्पन्न किया जाना चाहिए, शास्त्रों के अनुसार किसी विशेष इच्छा पूर्ति हेतु भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है और जीवन में पूर्ण रूप से मदन सुख, माया सुख, क्रिया सुख, ऐश्वर्य सुख, सहयोग-सुख हेतु भी यह साधना सम्पन्न की जाती है।

त्रिपुर मदनाक्षी मन्त्र

।। क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर मदनाक्षी
मदीप्सितां योषितं देहि वांछित कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र का १०८ बार जप वीर मुद्रा में ही करना है, और फिर जब मन्त्र जप अनुष्ठान पूरा हो जाय तो नेत्र बन्द कर अपने हाथ ऊंचे कर चुप-चाप ध्यान मुद्रा में बैठे रहें, कुछ विशेष चेतनी क्रियाओं का अनुभव होता है, और यह सब साधना में सफलता के प्रतीक है।

यह पूजा विधान पांच दिन इसी रूप में करना है, पुष्प प्रतिदिन नये लायें, जब पांच दिन पूर्ण हो जांय तो आपको त्रिपुर मदनाक्षी साक्षात् रूप से दिखाई देती है, और उस समय वर मांग लेना चाहिए, यह वर साधक की इच्छा पर निर्भर करता है, एक बार त्रिपुर मदनाक्षी सिद्ध होने पर साधक जब भी इस पूजा विधान को दोहराता है, त्रिपुर मदनाक्षी अपनी समस्त सहयोगिनी अप्सराओं, योगिनी शक्ति तथा बाणों के साथ उपस्थित होती है, और साधक के जीवन को रस से सराबोर कर देती है।

जीवन में भौतिक सुखों की इच्छा रखने वाले, पूर्ण आनन्द से जीवन जीने की इच्छा रखने वाले साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। ●

अब कोई भी स्त्री बांझ नहीं रह सकती

सौभाग्य जयन्ती के अवसर पर

पुत्रेष्टि प्रयोग

से

एक सर्वथा नवीन प्रयोग

हमारी संस्कृति की परम्परा में स्त्री को आशीर्वाद देते समय कहा जाता है, सौभाग्यवती भव, पुत्रवती भव, तथा पुरुष को आशीर्वाद देते समय कहा जाता है, आयुष्मान भव, इसका तात्पर्य है, कि स्त्री की पूर्णता उसके संतानवती, पुत्रवती होने से जुड़ी है, संतान सौभाग्य का लक्षण है।

सौभाग्य जयन्ती ऐसी ही पूर्णता का अभीष्ट फलदायक पर्व है, इस दिन विशेष "पुत्रेष्टि प्रयोग" सम्पन्न कर जीवन का यह अभिशाप मिटाया जा सकता है।

चिकित्सा विज्ञान आज अपने आपको अत्यन्त असंभव को संभव बनाने में समर्थ मानता है, फिर भी मानव शरीर के सभी रहस्यों को पूरी तरह से समझने में असमर्थ. ही रहा है, यदि पति-पत्नी में से किसी एक में कोई शारीरिक कमी है, तो उस कमी को तो पूरा कर सकता है, और इसी क्रम में **'टेस्ट ट्यूब बेबी'** नवीनतम् उपलब्धि है, जिसमें भ्रूण का संचेतन समन्वय शरीर से बाहर करा कर गर्भ में स्थापित किया जाता है लेकिन इस विधि में भी दोष हैं, सफलता का प्रतिशत बहुत कम है, संतान उत्पन्न होने पर मानसिक दृष्टि से कमजोर हो सकती है, विकलांग अथवा विकृत हो सकती है, यह ध्रुव सत्य है, कि मां के गर्भ की बराबरी की ही नहीं जा सकती, सामान्य प्रकृतिजन्य प्रक्रिया से जो संतान उत्पन्न होती है, वही संतान पूर्ण आरोग्यवान हो सकती है।

संतान की कमी और उसकी पीड़ा को वही स्त्रियां समझ सकती हैं, जिनके संतान नहीं हैं, उनको अपना जीवन बोझ लगने लगता है, ऊपरी तौर पर भले ही सामान्य व्यवहार दिखाये, लेकिन भीतर ही भीतर एक टीस सी उठती है, उनके घर-आंगन में भी बच्चों की किलकारी गूंजे और घर में जीवन में पूर्णता आ सके।

आज भारतवर्ष में एक करोड़ से अधिक स्त्री-पुरुष संतान हीनता अथवा पुत्र संतान न होने के अभिशाप से ग्रस्त हैं, इनमें से हर व्यक्ति ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार सभी प्रकार के उपाय किये और हर प्रकार से चिकित्सा अपनाई लेकिन नतीजों का प्रतिशत बहुत कम है, इसका क्या कारण है ? यदि कोई शारीरिक दोष है, तो इसे मिटाया जा सकता है लेकिन जब ऐसे दम्पत्तियों के द्वारा चिकित्सा के अच्छे से अच्छे उपाय करने के बावजूद भी सफलता प्राप्त नहीं होती है तो वे निराश और हताश हो जाते हैं, उनके लिए सारा संसार अन्धकार में डूबा हुआ सा प्रतीत होता है, जीवन भार स्वरूप लगने लगता है, भीतर ही भीतर प्रेम रस सूखने लगता है और मन में कुंठाएं व्याप्त हो जाती हैं, जिसकी वजह से वे चिड़चिड़े, बीमार झल्लाने वाले स्त्री पुरुष बन जाते हैं।

इन सभी के मन में एक बात अवश्य ही आती है, कि क्या कारण है, कि इनके संतान नहीं हो रही है, जब कि शारीरिक दृष्टि से पति-पत्नी दोनों स्वस्थ हैं, क्यों चिकित्सा विज्ञान वहां आकर थक जाता है, उन्होंने ऐसे क्या दोष इस जन्म अथवा पूर्व जन्म में किये हैं, जिसका अभिशाप भोगना पड़ रहा है, इन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलता है, दीवारों से सर टकराने से क्या फायदा, आवश्यकता इस बात की है, कि इस निराशा, कुंठा को हटाने के लिए शान्तिपूर्वक दूसरा उपाय सोचा जाय और प्रयोग में लाया जाय।

साधना का क्षेत्र अनन्त है

जिन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान के पास नहीं है, उनका उत्तर मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हमारे शास्त्र में, हमारे तन्त्र-मन्त्र में, हमारी साधनाओं में है, साधनात्मक प्रक्रिया द्वारा तो सभी प्रकार के दोषों का निदान प्राप्त किया जा सकता है और यह ध्रुव सत्य है, कि आपके इस जन्म के कार्य आपकी आन्तरिक रचना-संरचना पर प्रभाव डालते हैं और उनका परिणाम इसी जीवन में देखने को मिलता है, संतान का होना तो पति-पत्नी दोनों के संयोग पर निर्भर है, और यदि दोनों में से किसी एक के जीवन पर भी कोई अभिशाप है तो संतान कैसे हो सकती है, इसलिए उपाय व दोषों का शमन साथ-साथ करना आवश्यक है।

हमारे ऋषि मुनियों ने जो तपस्याएं की, उसमें उन्होंने केवल जंगल में बैठ कर भगवान का नाम नहीं जपा उन्होंने जीवन को पूरा महत्व देते हुए उसकी प्रत्येक समस्या को सुलझाने का प्रयास किया, उनका यह चिन्तन रहा कि परोपकार की भावना से कार्य कर किस प्रकार समाज में रहने वाले व्यक्ति के जीवन को साधारण से श्रेष्ठ और श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनाया जाय, इसके लिए गणनाओं का, विवेचन किया, प्रयोग किये, प्रयोगों की प्रामाणिकता को परखा और जब पूर्ण रूप से आश्वस्त हो गये तो उसे संहिता बद्ध करा कर समाज के सामने प्रस्तुत किया।

संतान हीनता के सम्बन्ध में अनेकों रचनाएं हैं, पूज्य गुरुदेव ने इस प्रश्न पर विचार कर जो रहस्य तार खुले रूप में बताया, वही आज पत्रिका पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने में प्रसन्नता हो रही है।

सौभाग्य जयन्ती : कार्तिक मास के अन्तिम पांच दिन

हर कार्य का एक निश्चित समय और मुहूर्त होता है, उस समय विधि पूर्वक कार्य करने से तत्काल सफलता प्राप्त हो जाती है, यही तो काल चक्र की विशेषता है, इसके प्रभाव से कोई भी अछूता नहीं है, नवरात्रि,

दीपावली, की भांति ही सौभाग्य जयन्ती भी एक विशेष सिद्ध मुहूर्त है जिसमें कुछ विशेष साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं, गृहस्थ जीवन के प्रवेश अर्थात् विवाह से लेकर गृहस्थ जीवन में शान्ति, संतान प्राप्ति, गृहस्थ प्रेम, परिवार में सुख वृद्धि, पत्नी स्वास्थ्य इत्यादि से सम्बन्धित साधना इस शुभ मुहूर्त में सम्पन्न की जा सकती है, संतान सम्बन्धी साधना अथवा पुत्र प्राप्ति हेतु साधना इन पांच दिनों में पति-पत्नी दोनों मिल कर करें तभी पूर्ण सफलता प्राप्ति हो सकती है, गृहस्थ जीवन के दोनों पहियों (पति-पत्नी) का सामंजस्य, प्रेम, सहयोग, आवश्यक है और यही इस साधना का मूल बिन्दु है कि किस प्रकार एक दूसरे के प्रति प्रेमाकर्षण बढ़े और दोनों के संयोग से ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति नवीन शिशु की उत्पत्ति हो, जो परिवार में सौभाग्य, आनन्द, यश, कीर्ति लाए।

(यदि सौभाग्य जयन्ती के अवसर पर स्त्री रजस्वला है तो साधना में पति के साथ न बैठे, पति के बांई ओर पत्नी के वस्त्र तथा एक नारियल रखें)।

श्रेष्ठ संतान प्राप्ति प्रयोग

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया है, कि इस प्रयोग को, पति-पत्नी दोनों को सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि दोनों मिल कर एक साथ प्रयोग करते हैं, तो तुरन्त प्रभाव प्राप्त होता है।

इस प्रयोग में कुल ९ वस्तुओं की आवश्यकता रहती है—

१-जलपात्र, २-पुष्प, ३-नारियल, ४-त्रिगन्ध, ५-पुत्रदा यन्त्र, ६-पुत्रजीवा माला, ७-पांच मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष, ८-शुद्ध घृत, ९-मिट्टी के ५ दीपक।

इसके अलावा साधना सामग्री में किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता नहीं है, पांच दिन रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न करना है।

गौतमीय तन्त्र के अनुसार—**"पुत्रदा यन्त्र और पुत्र-जीवा माला"** **केशवकीर्त्यादिन्यास, तत्वन्यास** या **दश-तत्वन्यास** तथा **विभूतिपंजरन्यास** से सिद्ध होना आवश्यक है और इनकी सिद्धि इसी क्रम में की जानी चाहिए तभी यह पूर्ण फलदायक रहते हैं।

साधना प्रयोग

प्रथम दिन रात्रि को पुरुष पीली धोती धारण करे और स्त्री पीली साड़ी पहिने, इसके पश्चात् पति-पत्नी दोनों अपने पूजा स्थान में पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठें, अपने सामने एक पात्र में त्रिगन्ध से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उस पर **'पुत्रदा यन्त्र'** को स्थापित करें, यन्त्र के पीछे एक ही क्रम में पांच मधुरूपेण रुद्राक्ष स्थापित करें और यन्त्र के सामने पांच मिट्टी के दीपक
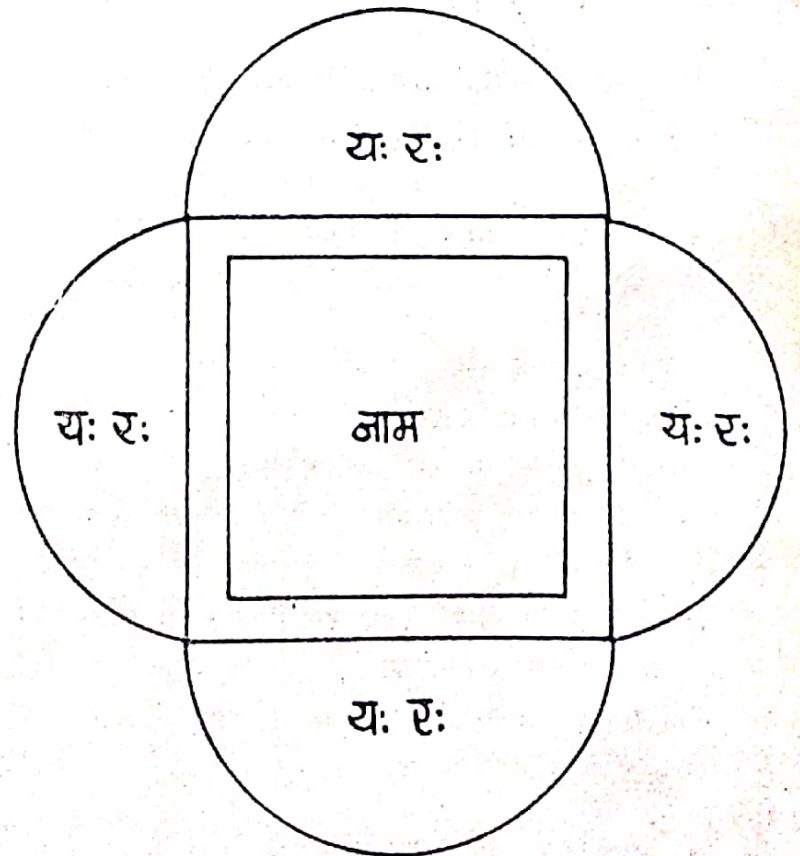
गर्भरक्षाकर यन्त्र

शुद्ध घी डाल कर जलाएं, इस प्रकार का पूजन पांचों प्रकार के दोष — १-शारीरिक दोष, २-दैविक दोष, ३-भौतिक दोष, ४-पितृ दोष, ५-पूर्वजन्मकृत दोष के निवारण में सहायक माने जाते हैं ।

अब त्रिगन्ध से पांचों रुद्राक्ष पर तिलक करें, फिर पुत्रदा यन्त्र पर त्रिगन्ध से तिलक कर नारियल उसके सामने रख दें, यन्त्र के चारों ओर पुत्रजीवा माला रखें ।

अब पति-पत्नी दोनों दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें—

अस्य श्री संतान गोपाल मन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सुतप्रदः कृष्णो देवता ममाभीष्ट-सिद्धये जपे विनियोगः ।।

इसके साथ ही कृष्ण का बाल्य रूप चित्र रखें और कामना करें कि मुझे भगवान कृष्ण की तरह श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति हो ।

अब पति-पत्नी दोनों नीचे लिखे मन्त्र की पांच-पांच माला फेरें, यह मन्त्र पुत्रजीवा माला से ही सम्पन्न करना है—

देवकी सुतगोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणागति ।।

इस प्रकार इस मन्त्र जप की पांच माला पूर्ण हो जाने के पश्चात् पति-पत्नी एक विशेष प्रयोग और करें, एक दूसरे पात्र में सामने रखे हुए एक दीपक को लें और पात्र में पुष्प, चावल, तथा प्रसाद रखें तथा उसी स्थान पर बैठ कर दोनों जोर से उच्चारण करते हुए निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें, पूरे १०८ बार मन्त्र जप के समय जिस पात्र में दीपक रखा हुआ है, वह पात्र नीचे नहीं रखना है ।

मन्त्र

।। ॐ हरिवंशाय पुत्रान् देहि देहि नमः ।।

दूसरे दिन पूरे प्रयोग को इसी प्रकार से सम्पन्न करना है, लेकिन पांच दीपक में से पूजन में दूसरा दीपक काम में लेना है, इस प्रकार पांचों दिन अलग-अलग दीपक लेते हुए पांच दिन का प्रयोग करना है ।

अन्तिम दिन पूर्ण प्रयोग हो जाने के पश्चात् पूजा में रखे हुए नारियल को उसी स्थान पर छील कर उसकी गिरी पति-पत्नी दोनों प्रसाद रूप में ग्रहण करें ।

पुत्रजीवा माला से आगे ११ रविवार तक पत्नी मन्त्र जप सम्पन्न करे, पांचों मिट्टी के दीपक किसी चौराहे पर रख दें अन्य सामग्री को पोखर, नदी, या समुद्र के जल में अर्पित कर दें ।

ग्यारह रविवार व्रत में उपवास ही करना चाहिए, एक समय यदि भोजन करें तो भोजन में नमक का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है ।

वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इस प्रयोग की सफलता से कई दम्पतियों को अनुकूलता, लाभ और सफलता प्राप्त हुई है ।

ऐसा अवसर वर्ष में एक बार ही आता है, यदि इस अवसर को चूक जाते हैं तो पुनः अगले वर्ष ही इस प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है, साधक स्वयं तो यह प्रयोग सम्पन्न करें ही, अपने आस पड़ोस या किसी परिचित के घर में पुत्र न हो तो उसे भी यह प्रयोग समझा कर पुण्य लाभ अर्जित करें ।

यह प्रयोग केवल पुत्र प्राप्ति के लिए ही नहीं अपितु यदि घर में पुत्र हो तो आज्ञाकारी पुत्र हो, पुत्र की दीर्घायु, पुत्र के स्वास्थ्य लाभ और पुत्र के विवाह अथवा पुत्र के व्यापार वृद्धि के लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है । ●

क्या अकाल मृत्यु से छुटकारा संभव है ?

हां, केवल

नचिकेता प्रयोग से

जिस प्रयोग को यम ने स्वयं नचिकेता को समझाया था

केवल यम द्वितीया (८-११-९१) को यह प्रयोग किया जा सकता है

बालकों के अकाल मृत्यु दोष निवारण हेतु विशेष आवश्यक

उपनिषद जीवन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों की व्याख्या को लेकर लिखे गये हैं, कठोपनिषद में 'मृत्यु' उसका व्यक्ति से सम्बन्ध, कारण, निदान, अपमृत्यु, अकाल मृत्यु पर पूर्ण व्याख्या है, यह व्याख्या नचिकेता और यम के प्रश्नोत्तर पर आधारित है।

नचिकेता महर्षि उद्दालक का पुत्र था, महर्षि ने एक विशेष विश्वजित यज्ञ किया, और अपना सारा धन ब्राह्मणों को दान में दे दिया, इस दान में बूढ़ी, बीमार, मरणासन्न गायें भी थीं, जिसे देख कर बालक नचिकेता ने सोचा कि यह तो पाप हो जायेगा, पिता को रोकना चाहिए, उसने अपने पिता से कहा कि हे पिताश्री ! आप मुझे दान में किसको देंगे, उसके बार-बार पूछने पर पिता ने क्रोध में कहा कि मैं तुझे मृत्यु को देता हूं, इस पर नचिकेता को बड़ा विचार आया उसने सोचा कि

मैंने ऐसा कौन सा आचरण किया है, जिस कारण मेरे पिता ने मुझे ऐसा वचन कहा फिर भी उसने पिता को समझाया और कहा कि अब आप शोक न करें और सत्य का पालन करते हुए मुझे यमराज के पास जाने की अनुमति दें।

पिता की आज्ञा प्राप्त कर नचिकेता यमपुरी गया उस समय यमराज कहीं बाहर गये हुए थे, वह तीन दिन तक बिना भोजन, बिना जल उसके द्वार पर बैठा रहा, इन तीन दिन के पश्चात् यमराज जब आये तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा कि हे ब्राह्मण देवता! आप अतिथि हैं, आपने तीन दिन तक मेरे घर पर बिना भोजन किये निवास किया है, आप मुझसे तीन वर अवश्य मांगे, नचिकेता ने निम्न तीन वर मांगे—

१–मेरे पिता मेरे प्रति क्रोध और खेद से रहित हो जांय, मुझ पर पूर्ण विश्वास कर मेरे साथ प्रेमपूर्वक बात करें।

२–स्वर्ग लोक में भय और मृत्यु रूप आप स्वयं भी नहीं है, वहां जरा, पीड़ा, वृद्धावस्था, भी नहीं है, मुझे इस विद्या की प्राप्ति का ज्ञान कराएं।

३–मरे हुए मनुष्य के विषय में यह संशय है कि मरने के बाद आत्मा रहती है, और कोई कहता है, कुछ भी नहीं रहता, आप मुझे भलीभांति समझाइये, जिससे मैं इस सम्बन्ध में उचित निर्णय ले सकूं।

यहां हम नचिकेता के दूसरे वर के सम्बन्ध में व्याख्या करेंगे जिसमें उसे यम द्वारा स्वर्गदायिनी विद्या का ज्ञान कराया गया, स्वर्ग का तात्पर्य है, पीड़ा, दुःख, भय से मुक्ति, जीवन इच्छानुसार जिया जाय, अकाल मृत्यु का दोष न हो, अपमृत्यु न हो, यह विद्या ही स्वर्गदायनी अग्नि विद्या है।

मां-बाप अपने बारे में जितना चिन्तित नहीं रहते, उससे अधिक चिन्तित अपने बच्चों के प्रति रहते हैं, क्योंकि मां-बाप के दोषों का सुफल, कुफल, बच्चों को ही भोगना पड़ता है, जीवन प्रक्रिया में बच्चा पूर्ण रूप से विकसित प्राणी नहीं होता है, इस कारण बीमारी का प्रभाव भी उस पर ज्यादा पड़ता है, मृत्यु दर भी बालकों में ही ज्यादा रहती है।

बच्चे ही मां-बाप की आशा का केन्द्र होते हैं, बच्चे उनकी स्वनिर्मित रचना होते हैं और हर मां-बाप चाहता है, कि मेरे जीवन में जो कमियां रहीं वे मेरे बच्चे के जीवन में नहीं रहें, मैं जो जीवन में प्राप्त नहीं कर सका वह मेरा बच्चा प्राप्त करे, मेरा पुत्र अपने जीवन में पूर्ण उन्नति कर मां-बाप का नाम रोशन करे, बच्चों के सुख में ही मां-बाप का सुख रहता है और ऐसे में जब कोई बालक अपमृत्यु प्राप्त कर लेता है, तो उसकी पीड़ा मां-बाप के लिए असहनीय होती है, इससे बड़ा दुःख हो ही नहीं सकता।

इसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर नचिकेता द्वारा पूछने पर यमराज ने जो कि मृत्यु के अधिपति हैं, विस्तार से अग्नि विद्या का ज्ञान दिया, इसको पूर्ण रूप से स्पष्ट किया जाय तो कई ग्रन्थ के समान रचना हो जायेगी आज पत्रिका पाठकों के सम्मुख इसके सार रूप में एक विशेष **"नचिकेता प्रयोग"** दिया जा रहा है, जो इस यम-द्वितीया को सम्पन्न कर जीवन का एक महादोष जो बालकों की अपमृत्यु, अकाल मृत्यु से सम्बन्धित है, दूर किया जा सकता है।

नचिकेता अग्नि विद्या

मृत्यु का पाश अपने ही सामने काट कर जीवन में स्वर्ग के समान आनन्द प्राप्त करने की क्रिया का नाम ही नचिकेता अग्नि विद्या है, इसमें केवल आवश्यकता है निर्दोष श्रद्धा, अडिग ओज की, आकांक्षा, क्षुद्र प्रलोभन से रहित होकर धैर्य के साथ कार्य करने की, तभी यह आनन्द पूर्ण रूप से बना रहता है।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इसका आधार अग्नि है, अग्नि को साक्षी रखते हुए अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, और इस प्रयोग को केवल यम द्वितीया को ही सम्पन्न करना है।

इस साधना हेतु एक अग्नि कुण्ड पात्र जो कि लोहे का अथवा तांबे का बना हो, व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, सुविधानुसार जमीन खोदकर भी यज्ञ कुण्ड बना सकते हैं, मूल अनुष्ठान इसी में सम्पन्न किया जाता है।

इसके अतिरिक्त साधना में 'बारह सविता चक्र' 'हिरण्मयेन पात्र', 'अग्नि प्रोक्त यन्त्र' आवश्यक है, साथ ही लाल चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगन्ध, आवश्यक है।

साधना विधान

यम द्वितीया के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, तथा एक लोटे में जल लें, उसमें चन्दन और सरसों डालें, बांएं हाथ से जल को अपने पूरी देह पर छिटों से स्पर्श कराएं तथा शेष जल को बांई नासिका के स्पर्श कर अपनी देह में भगवान शंकर का चिन्तन करें, अब एक ताम्र पात्र में गन्ध, जल, चन्दन, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगन्ध, मिला कर सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य को नमस्कार कर उसे अर्घ्य अर्पित करें, सूर्य नमस्कार करते समय निम्न मन्त्र द्वारा सूर्य का आह्वान करें—

ॐ भूः ब्रह्महृदयाय नमः।
ॐ भुवः ब्रह्मशिरसे।
ॐ स्वाः रुद्र शिखायै।
ॐ भूभुर्वः स्वः ज्वालामालिनी शिखयै।
ॐ महाः महेश्वराय कवचाय।
ॐ जनः शिवाय नेत्रेभ्यः।
ॐ तपः तापकाय अस्त्राय फट्।

इस प्रकार तीन बार अर्घ्य अर्पित करने के पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में जाय, तथा संक्षिप्त रूप में गुरु पूजन गणपति पूजन तथा शिव पूजन सम्पन्न करे, तत्पश्चात् अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि "मैं अपने बच्चों (यहां बच्चों का नाम ले) के दुःस्वप्न नाश हेतु, दुःख और रोगों के नाश हेतु, नेत्रज्योति वृद्धि हेतु, आयु वृद्धि हेतु, दिखने और न दिखने वाली राक्षसी बाधाओं के नाश हेतु, अपने गुरु, सूर्य, शिव और गणेश को साक्षी रखते हुए यह अग्नि विद्या सम्पन्न कर रहा हूं, सभी देव मेरी साधना में सहायक हों।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर मध्य में **हिरण्मयेन पात्र** एक चावल की ढेरी पर स्थापित करे, और इसके आगे मन्त्र सिद्ध **अग्नि प्रोक्त यन्त्र** रखे, इस पर चन्दन का तिलक लगाए और पूजन प्रारम्भ करे, दो दीपक एक बांई ओर तथा एक दाईं ओर जला दे।

रक्त चन्दन से जिस बालक या बालकों हेतु यह साधना कर रहे हैं, उन्हें तिलक अवश्य लगा दे, अब अग्नि मन्त्र जप करते हुए इस पर चन्दन, सुपारी, दूध, अष्ट गन्ध, अर्पित करे।

अग्नि मन्त्र

॥ ॐ नमो भगवते हिरण्मयं ज्योति रूपं
आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा ॥

अब यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया जाता है, इस हेतु श्रेष्ठ लकड़ी, उपले, तिल, जौ, यज्ञ सामग्री पैकेट की व्यवस्था कर ले, अग्नि जला कर थोड़ी प्रचण्ड होने दे और उसके पश्चात् तिल, जौ से मिश्रित यज्ञ सामग्री से आहुतियां प्रारम्भ की जाती है।

सर्वप्रथम अग्नि के बारह स्रोत का आह्वान किया जाता है, और निम्न मन्त्रों का जप करते हुए आहुति दे—

ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा

ॐ धाताय नमः स्वाहा

ॐ भगाय नम : स्वाहा

ॐ पूषाय नमः स्वाहा

ॐ मित्राय नमः स्वाहा

ॐ वरुणाय नमः स्वाहा

ॐ अर्यमाय नमः स्वाहा

ॐ अंशु नमः स्वाहा

ॐ विवस्वान् नमः स्वाहा

ॐ त्वष्टाय नमः स्वाहा

ॐ सविताय नमः स्वाहा

ॐ विष्णु नमः स्वाहा

अब अग्नि के बारह स्वरूपों का यज्ञ करना है, इस हेतु पूजा सामग्री में लाये हुए बारह सविता चक्रों का प्रयोग करे, येबारह स्वरूप हैं—

१-तपिनी, २-तापिनी, ३-धूम्रा, ४-मरीचि, ५-ज्वालिनी, ६-रुचि, ७-सुधूम्रा, ८-भोगदा, ९-विश्वा, १०-बोधिनी, ११-धारिणी और १२-क्षमा ।

इन बारह सविता चक्रों की आहुति देने के पश्चात् अग्नि मन्त्र बोलते हुए १०८ आहुति तिल जौ की और १०८ आहुति घी की देनी है, इस प्रकार कुल २१६ आहुतियां सम्पन्न करनी हैं ।

इसके पश्चात् उपसंहार आहुति सम्पन्न की जाती है, जिसमें दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए कि जिस प्रकार अग्नि से अन्धकार का नाश होता है उसी प्रकार हमारे सभी दोषों का दुष्प्रभाव नष्ट करें यह पूर्ण यज्ञ आपको समर्पित है, ऐसा बोल कर शेष बची सारी सामग्री यज्ञ कुण्ड में अर्पित कर देनी चाहिए ।

जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो गुरु आरती सम्पन्न करे, तथा सामने पात्र में रखा हुआ जल पूरे घर में छिड़के, बच्चों पर जल के छिटें दे तथा प्रसन्न मन से ब्राह्मण भोजन कराए अथवा इच्छानुसार दान इत्यादि सम्पन्न करे ।

यह अग्नि विद्या रहस्यात्मक विद्या है, और इसका प्रभाव चमत्कारिक रूप से स्पष्ट होता है, सिद्ध होने पर अग्नि देव साक्षात् साधक के भीतर समा कर उसे तेजोमय बना देते हैं, बालकों की अभय रक्षा करते हैं, और जिस प्रकार अग्नि में कोई भी वस्तु भस्म हो जाती है, उसी प्रकार रोग, शोक, दुःख भस्म हो कर समाप्त हो जाते हैं ।

आवश्यक जानकारी

आडियो कैसेट रील तथा वीडियो कैसेट फिल्म के अत्याधिक मूल्य वृद्धि हो गई है, अतः हमें भी विवशता वश कैसेट के मूल्य में मामूली वृद्धि करनी पड़ रही है, आडियो एवं वीडियो कैसेट से सम्बन्धित कार्य कार्यालय द्वारा बिना किसी व्यापारिक लाभ के किया जाता है, उद्देश्य केवल इतना ही है कि गुरु-वाणी, गुरु-उत्सव, साधना शिविर का पूर्ण लाभ आपके घर में प्राप्त होता रहे गुरु-वाणी घर-घर में गूंजती रहे । **प्रति कैसेट का संशोधित मूल्य— आडियो—२४)रु० वीडियो—२०१)रु० ।**

पिछले तीन महीनों से सभी सदस्यों को **"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान"** पत्रिका रैपर पर अंग्रेजी में कम्प्यूटर द्वारा पता छापकर भेजी जा रही है इस सम्बन्ध में निवेदन है कि आप अपना नाम व पूरा पता (जिस पते पर पत्रिका मंगाना चाहते हैं) अंग्रेजी में शुद्ध रूप से लिख कर भेज दें, उसी के अनुसार उसे कम्प्यूटर में फीड कर दिया जायेगा । **नाम............ पता .... डाक घर............ जिला.........., राज्य.........., पिन कोड..........., आदि लिखें ।**

शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार किया जा सकता है

काल भैरव प्रयोग से

किसी भी शुभ कार्य हेतु भैरव स्थापना अवश्य की जाती है, क्योंकि भैरव रक्षाकारक देव हैं, जहां भैरव की स्थापना पूजा होती है, वहां कार्य में कोई विपत्ति, बाधा नहीं आ सकती, काल भैरवाष्टमी के अवसर पर किया जाने वाला एक अनूठा प्रयोग जिसे संस्कृत जानने वाला और न जानने वाला कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है।

जो अपने दम पर जिये दुनियां उसी की कहलाती है, जो अपने जीवन में जोखिम उठा कर कार्य हाथ में लेता है, भाग्य उसी का साथ देता है, और वही अपने जीवन में सफल होता है, आप जी रहे हैं और मोहल्ले के बाहर आपको कोई पहिचानता ही नहीं है, फिर ऐसा जीवन किस काम का, नये-नये कार्य करने का, नये जोखिम उठाने का उत्साह हर समय होना चाहिए तभी सड़े-गले जीवन से नये जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि जो व्यक्ति आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं, उनके ही मार्ग में रुकावटें आती हैं, शत्रु उत्पन्न होते हैं, जो अपने जीवन को एक निश्चित गति पर कोल्हू के बैल की तरह चलने देते हैं, उसके शत्रु कैसे होंगे? जो जीवन से भाग कर छुप जाता है, वहां साधना का नाटक करता है, उसके भी शत्रु कैसे होंगे इसलिए शत्रु तो जीवन का अंग है, इनसे घबरा कर पैर पीछे हटा लिये तो उन्नति नहीं हो सकती।

इतिहास उठा कर देखे तो हमें यह स्पष्ट मालूम पड़ेगा कि हमने केवल उन्हीं की पूजा की है, जो अपने शत्रुओं से लड़े हैं, और जिन्होंने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है, चाहे वह राम हों अथवा श्रीकृष्ण, हनुमान हों अथवा महाकाली, इनमें से प्रत्येक का जीवन आख्यान

राक्षस विजय से जुड़ा है, अतः आवश्यकता है, कि अपने आपको प्रबल बनाया जाय, शत्रु बाधा का वीरता से सामना किया जाय, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाय, संघर्ष कर जीवन में कुछ प्राप्त करने का आनन्द ही अनोखा होता है।

काल भैरव

शिव के अंश, शिव स्वरूप, शक्ति सम्पन्न, शक्ति स्वरूप महाकाली सेवक के रूप में भैरव की मान्यता विख्यात है, भैरव जन-जन के देव हैं, जो साधक विशेष मन्त्रों को नहीं जानता, पूजा का विशेष विधान नहीं जानता, वह भी भैरव पूजा कर सकता है, और ऐसे एक दो नहीं हजारों-लाखों उदाहरण हैं जहां सामान्य साधक को भैरव कृपा से विशेष सफलता मिली है।

रक्षाकारक देव

भैरव की मान्यता मूल रूप से रक्षाकारक देव के रूप में ही है, बड़े से बड़े यज्ञ में पहले भैरव स्थापना की जाती है, जिससे कि भैरव अपने शक्ति से दसों दिशाओं को आबद्ध कर देते हैं फिर सम्पूर्ण कार्य में कोई विघ्न उपस्थित नहीं हो सकता है, भूत, पिशाच, प्रेत, तांत्रिक प्रयोग कैसा भी प्रबल प्रहार किया जाय तो जहां भैरव की उपस्थिति है, वहां से यह प्रहार उलटे लौट आते हैं और इस प्रकार के गलत तांत्रिक प्रयोग को करने वालों का ही नाश कर देते हैं।

भैरव पूजा का विधान अत्यन्त सरल है, और आज पाठकों हेतु काल भैरव के कुछ सरल प्रयोग स्पष्ट किये जा रहे हैं जिनमें सरलता से ही, इनकी सिद्धि और उपयोगिता है।

काल भैरवाष्टमी

दिनांक २८-११-९१ गुरुवार मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को काल भैरवाष्टमी दिवस है, और इस दिवस की मान्यता के सम्बन्ध में विख्यात है, कि इस दिन जो साधक भक्तिपूर्वक भैरव साधना सम्पन्न कर लेता है, भैरव साक्षात् उस साधक में विराजमान हो जाते हैं।

भैरव साधना के स्वरूप को मूलरूप से तांत्रिक स्वरूप दे दिया गया है, जो कि गलत है, यह तो एक सात्विक जीवन की आवश्यक साधना है, आप अपनी ओर से किसी का बुरा नहीं चाहते हैं, लेकिन क्या आप पर कोई प्रहार करेगा तो उसका जबाब नहीं देंगे? क्या आपको व्यर्थ के मुकदमों की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, तो मुकदमे नहीं लड़ेंगे? क्या आपके विरुद्ध तांत्रिक प्रयोग होंगे और घर में तांत्रिक प्रयोगों के कारण जरा, पीड़ा, बीमारी, मृत्यु, शोक, रोग, दुःख रहेगा तो इसे दूर करने का उपाय नहीं करेंगे?

जीवन को श्रेष्ठ रूप से जीने के लिए इन सब बाधाओं को हटाना आवश्यक है, और इसके लिए सरल से सरल अचूक से अचूक प्रयोग काल भैरव प्रयोग ही है, जो आपके हाथ में शक्ति का, उत्साह का वह वज्र थमा सकते हैं, जिसके बलबूते पर आप अपना जीवन अपनी इच्छानुसार जी सकते हैं, अपने व्यक्तित्व को पराक्रमी बना सकते हैं, अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सकते हैं।

मूल रूप से चार बाधाएं व्यक्ति के जीवन को दीमक की तरह खा जाती हैं, ये हैं—

१-शत्रु बाधा, २-रोग, बीमारी ३-मुकदमेबाजी ४-तांत्रिक बाधा, भय आदि हैं।

इनमें से कोई भी एक बाधा रहने पर व्यक्ति अपना जीवन सही ढंग से नहीं जी सकता, इसके चक्र में उलझता हुआ अपनी शक्ति क्षीण करता रहता है, काल भैरवाष्टमी पर इन्हीं चार बाधाओं के निवारण हेतु किया जाने वाले विशेष साबर प्रयोग पाठकों के लिए प्रस्तुत किये जा रहे हैं, इन महत्वपूर्ण प्रयोगों को निष्ठा से सम्पन्न कर तत्काल प्रभाव का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इन में से प्रत्येक प्रयोग के लिए अलग-अलग मन्त्र विधान है, कुछ विशेष सामग्री हैं, साधक जिस बाधा विशेष का निवारण करना चाहता है, उससे सम्बन्धित प्रयोग काल भैरवाष्टमी को विशेष रूप से सम्पन्न करें, अन्य प्रयोग वह किसी भी रविवार को सम्पन्न कर सकता है, प्रति रविवार भैरव साबर मन्त्र प्रयोग सम्पन्न करने से ही उसे जीवन में भैरव रक्षा का पूर्ण वर निश्चित रूप से प्राप्त हो जाता है।

१- शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

भैरवाष्टमी के दिन प्रातः साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें सिन्दूर का तिलक लगाएं, अपने सामने एक मिट्टी की ढेरी बना कर उस पर पानी छिड़कें फिर सिन्दूर छिड़कें और उस पर **"काल भैरव गुटिका"** स्थापित करें, ढेरी के चारों ओर **"पांच आक्रान्त चक्र"** तिल की ढेरियां बना कर रखें, प्रत्येक चक्र पर सिन्दूर छिड़कें, अब अपने पूजा स्थान में दीप और गुग्गुल का धूप तथा अगरबत्ती इत्यादि जला दें, अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अपनी अमुक शत्रु बाधा के निवारण हेतु काल भैरव प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

अब एक पात्र में सरसों, काले तिल मिलाएं, उसमें थोड़ा तेल डालें, थोड़ा सिन्दूर डाल कर उसे मिला दें, इस मिश्रण को निम्न भैरव मन्त्र का जप करते हुए काल भैरव गुटिका के समक्ष अर्पित करते रहें—

मन्त्र

विभूति-भूति-नाशाय, दुष्ट-क्षय-कारकं, महा-भैरवे नमः। सर्व-दुष्ट-विनाशनं सेवकं सर्व-सिद्धि कुरु। ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व सिद्धि-र्भवेत्।

ॐ काल भैरव, श्मशान-भैरव, काल रूप-काल भैरव! मेरो वैरी तेरो आहार रे। काढ़ि करेजा चखन करो कट-कट। ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता। सर्व-सिद्धिर्भवेत्।

इस प्रकार ५१ बार इस मन्त्र का जप कर पूजा में रखें, धूप और दीप से भैरव आरती सम्पन्न करें, अब भैरव गुटिका को छोड़ कर बाकी सब सामग्री काले कपड़े में बांध कर जमीन में गाड़ दें, और उस पर भारी पत्थर रख दें।

आगे दो रविवार तक भैरव गुटिका के समक्ष इस मन्त्र का जप करते रहें।

यह प्रयोग इतना प्रबल है, कि प्रबल से प्रबल शत्रु भी तीस दिन के भीतर-भीतर शान्त हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं। ★

२- काल भैरव : रोग नाश प्रयोग

यह प्रयोग भी प्रातः ही सम्पन्न किया जाता है, इसमें यदि स्वयं की बीमारी नाश हेतु प्रयोग करना है, तो अपने नाम का संकल्प लें और यदि दूसरे के नाम से प्रयोग करना है, तो उसके नाम से संकल्प लें।

संकल्प

ॐ अस्य श्री वटुक भैरव-स्त्रोतस्य सप्त ऋषिः ऋषयः, मातृका छन्दः, श्री बटुकः भैरवो देवता, ममेप्सित-सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

अपने सामने एक पात्र में **"काल भैरव महायन्त्र"** स्थापित कर उस पर सिन्दूर चढ़ाएं तथा एक दीपक

जलाएं जिसमें चार बत्तियां हों, तथा दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें, भैरव यन्त्र के सामने पुष्प, लड्डू, सिन्दूर, लौंग तथा पुष्प माला, काला डोरा रखें तथा मन्त्र जप प्रारम्भ करें, मन्त्र जप के पहले जल से भरे हुए पात्र का मुंह लाल कपड़े से बांध दें।

अब एक पात्र में तिल लें उसमें सात सुपारी रखें, तथा निम्न मन्त्र का जप करते हुए यह तिल दक्षिण दिशा की ओर फेंकते रहें—

मन्त्र

ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भय-विनाशनं देवता-सर्व-सिद्धिर्भवेत् । शोक-दुःख-क्षयकरं निरंजनं, निराकारं नारायणं, भक्ति-पूर्ण त्वं महेशं । सर्व-काम-सिद्धिर्भवेत् । काल-भैरव, भूषण-वाहनं काल हन्ता रूपं च, भैरव गुनी । महात्मनः योगिनां महा-देव-स्वरूपं । सर्व सिद्धयेत् । ॐ काल-भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता । सर्व-सिद्धिर्भवेत् ।

इस प्रकार १०८ बार मन्त्र जप के पश्चात् सातों सुपारी सभी दिशाओं में फेंक दें, भैरव यन्त्र को पूजा में प्रयोग लाये काले डोरे से रोगी की भुजा पर बांध दें अथवा गले में पहना दें, पूजा का पवित्र जल भी पिलाएं, पुराने से पुराने रोग इस प्रयोग से दूर होते देखे गये हैं। ★

३- मुकदमा-वादविवाद में विजय का प्रयोग

इस प्रयोग हेतु साधक सायंकाल इस विशेष दिन को प्रयोग सम्पन्न करें, पूजा स्थान में पूर्ण रूप से शान्ति होनी चाहिए तथा जिस विशेष कार्य के सम्बन्ध में प्रयोग करना है, वह कार्य एक कागज पर सिन्दूर से लिख लें।

अब अपने सामने **"काल भैरव महा शंख"** स्थापित करें, शंख के चारों ओर सिन्दूर से घेरा बना दें, सामने **"एक नागचक्र"** स्थापित करें, भैरव शंख के दोनों ओर तीन-तीन तेल के दीपक जला दें।

इसके पहले वाले प्रयोग के अनुसार संकल्प कर जल छोड़ें तथा वह कागज जिसमें कार्य लिखा है, भैरव शंख के नीचे रख दें, वीर मुद्रा में बैठ कर मुट्ठी ऊपर कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें —

मन्त्र

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं । (अमुक) मारय मारय, उच्चाटय उच्चाटय, मोहय मोहय, वशं कुरु कुरु । सर्वार्थकस्य सिद्धि-रूपं त्वं महा-काल ! काल-भक्षणं महा-देव-स्वरूप त्वं । सर्व सिद्धयेत् ! ॐ काल भैरो, बटुक-भैरो, भूत-भैरो ! महा-भैरव महा-भय -विनाशनं देवता । सर्व सिद्धिर्भवेत् !

५१ बार मन्त्र जप करने के पश्चात् इस महा भैरव शंख को काले कपड़े में बांध कर अपने बैग, ब्रीफकेस, में रख दें और किसी भी मुकदमे के लिए जाते समय बैग अपने पास रखें, प्रबल से प्रबल विरोधी भी वशीभूत हो कर संधि करने को उत्सुक हो जाता है, मुकदमे में विजय प्राप्त होती है, मन्त्र जप नियमित रूप से अवश्य सम्पन्न करना है।

भैरव से सम्बन्धित उपरोक्त तीनों प्रयोगों की प्रामाणिकता साधक स्वयं प्रयोग सम्पन्न कर ही जान सकते हैं कि इन प्रयोगों में कितना अधिक प्रभाव है, काल भैरव प्रसन्न होने पर साधक को हर प्रकार का वरदान प्रदान कर देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और अपनी शरण में पूर्ण अभय प्रदान करते हैं, साधक की शक्ति में वृद्धि हो कर स्वयं भैरव समान श्रेष्ठ हो जाता है।

भैरवाष्टमी को यह प्रयोग सम्पन्न कर जब तक पूर्ण सफलता न मिले आगे आने वाले सात रविवार तक मन्त्र अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए। ●

आपके हाथ की भाग्य रेखा

क्या कहती है

स्वयं देखें, परखें

हाथ और हाथ पर बनी हुई रेखाएं व्यक्ति के भविष्य का दर्पण हैं, ईश्वर द्वारा प्रदत्त इन रेखाओं में जीवन की प्रत्येक घटना का विवरण छिपा हुआ है, आवश्यकता केवल इसी बात की है, कि इन रेखाओं को समझें, परख, यह सब आप स्वयं भी कर सकते हैं ।

इस क्रम में सबसे पहले भाग्य रेखा की स्थिति उसके प्रभाव का अध्ययन करते हैं, आप स्वयं आजमाएं, अपने परिचितों के हाथ का अध्ययन करें ।

प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह मजदूर हो, नौकरी पेशा हो, व्यापारी हो, राजनीतिज्ञ हो, अथवा करोड़पति हो, अपना हाथ उठा कर यह अवश्य सोचता है, कि मेरे भाग्य में आगे क्या है, उसे अपने कर्म के सम्बन्ध में तो जानकारी है, लेकिन भाग्य के खेल के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं, भाग्य का खेल भी विचित्र होता है, यह रंक को करोड़पति बना देता है और करोड़पति को भिखारी बना देता है, प्रतिष्ठित व्यक्ति को भी जेल की हवा खिला देता है, भगवान राम जैसे को वनवास भोगना पड़ गया, यह खेल उनके कर्मों का नहीं उनके भाग्य का था, भाग्य कब पलटा खा जाय, इसे जानना कठिन है लेकिन एक बात निश्चित है, कि आपके हाथ की रेखाओं में भाग्य का चित्रण साफ-साफ अंकित रहता है, इसे परख कर आप समझ सकते हैं कि आगे क्या होने वाला है ।

भाग्य रेखा

व्यक्ति के हाथ में सारी रेखाएं कमजोर कटी-फटी हों, परन्तु यदि भाग्य रेखा श्रेष्ठ और स्पष्ट है, तो सारे दोष छिप जाते हैं, और ऐसा व्यक्ति भाग्य के बल पर प्रगति करता है ।

भाग्य रेखा को देखने का सबसे स्पष्ट तरीका यह है कि यह रेखा हाथ की सबसे बड़ी उंगली मध्यमा जिसके तल में शनि पर्वत स्थित है, उस पर जाकर पूर्ण होती है, इसका उद्गम हाथ में कहीं से भी हो सकता है, इसीलिए इसको शनि रेखा भी कहा जाता है, इस रेखा के माध्यम से मानव की इच्छाएं, भावनाएं, मानसिक स्तर, क्षमता का अनुमान हो जाता है, इससे यह स्पष्ट होता है कि उसके

जीवन में आर्थिक स्थिति, धन, मान, पद, प्रतिष्ठा कैसी होगी, क्या यह अपने जीवन में बाधाओं को पार कर सकेगा, ये सारी स्थिति इससे स्पष्ट होती है, हाथ देखते समय रेखा के उद्गम और अन्त दोनों को सूक्ष्मता से देखना चाहिए, यदि यह रेखा बिना किसी अन्य रेखा का सहारा लिये स्पष्ट और निर्दोष रूप से शनि पर्वत तक पहुंचती है, तो ऐसी भाग्य रेखा प्रबल, श्रेष्ठ वृद्धिकारक मानी जाती है, यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पार कर उंगली के ऊपर चलती है तो दूषित कही जाती है।

भाग्य रेखा उद्गम स्थल और प्रभाव

सर्वोत्तम भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर बिना अन्य रेखाओं का सहारा लेते हुए शनि पर्वत तक पहुंचती है, यदि यह उंगली पर बढ़ती है, तो प्रभाव विपरीत हो जाता है, व्यक्ति की इच्छाएं, जरूरत से ज्यादा होती हैं, और वे पूरी नहीं होतीं, यदि शनि पर्वत तक पहुंच कर भाग्य रेखा दो मुंह हो जाती है तो विशेष सफलता का सूचक है, यदि एक सिरा गुरु पर्वत की ओर जाता है तो व्यक्ति जीवन में उच्च पद प्राप्त करता है, यदि शनि पर्वत पर अन्य रेखाएं उसे काटती हैं तो उसके जीवन में बाधाएं आती हैं।

जीवन रेखा के पास से निकल कर शनि पर्वत पर पहुंचने वाली भाग्य रेखा भी श्रेष्ठ है, बचपन में तकलीफ रहती है, लेकिन आगे २८वें वर्ष के पश्चात् पूर्ण भाग्योदय होता है, भाग्य रेखा और जीवन रेखा एक दूसरे को काटती हैं तो अशुभ है, जहां यह कटाव होता है, जीवन की उस अवधि में बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

यदि भाग्य रेखा शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होती है, तो उस व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के बाद होता है, ससुराल से विशेष लाभ प्राप्त होता है, वैवाहिक जीवन में मतभेद रहता है।

यदि भाग्य रेखा के साथ कोई सहायक रेखा न हो तो व्यक्ति जीवन में अपनी गलतियों पर पछताता रहता है, उसे मित्रों का सहयोग बहुत कम प्राप्त होता है, चन्द्र पर्वत के ऊपर से प्रारम्भ होने वाली भाग्य रेखा अत्यन्त श्रेष्ठ मानी गई है, ऐसे व्यक्ति का यौवन और वृद्धावस्था विशेष सुखकर रहता है, जीवन के उत्तरार्द्ध में धन, मान, यश प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

हृदय रेखा से प्रारम्भ होने वाली भाग्य रेखा भी अत्यन्त श्रेष्ठ है, जबकि मस्तिष्क रेखा सर्वोत्तम है, ऐसे व्यक्ति जीवन में पूर्णता प्राप्त करते हैं, उच्च अधिकारी, नेता बनते हैं, समाज उनके कार्यों से प्रभावित होता है।

भाग्य रेखा के साथ जितनी ज्यादा सहायक रेखाएं होती हैं, उतना ही व्यक्ति अधिक महत्वाकांक्षी होता है, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है, कि भाग्य रेखा वही है जो शनि पर्वत को स्पर्श करे।

भाग्य रेखा से सम्बन्धित विशेष तथ्य

१-यदि भाग्य रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और शनि पर्वत से होती हुई सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

२-यदि यह रेखा हृदय रेखा को काटते समय जंजीर के समान बन जाय तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी का सामना करना पड़ता है।

३-यदि भाग्य रेखा हथेली के मध्य में फीकी या पतली अथवा अस्पष्ट हो तो व्यक्ति का यौवन-काल दुःखमय होता है।

४-जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, उसका जीवन अत्यन्त साधारण और नगण्य सा होता है।

५-यदि भाग्य रेखा प्रारम्भ से ही टेढ़ी-मेढ़ी हो तो उसका बचपन अत्यन्त कष्टदायक होता है।

६-हथेली में भाग्य रेखा जिस स्थान में भी गहरी, निर्दोष और स्पष्ट होती है, जीवन के उस भाग में उसे विशेष लाभ या सुख मिलता है।

७-भाग्य रेखा हथेली में जितनी बार भी टूटती है, जीवन में उतनी ही बार महत्वपूर्ण मोड़ आते हैं या कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

८-यदि चन्द्र पर्वत को काट कर भाग्य रेखा आगे बढ़ती हो, तो व व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है।

९-यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर त्रिकोण का चिह्न हो, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।

१०-यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और उसकी शाखाएं गुरु, सूर्य तथा बुध पर्वत पर जाती हों, तो वह व्यक्ति विश्वविख्यात होता है।

११-यदि भाग्य रेखा के उद्ग स्थान पर तीन या चार रेखाएं निकली हुई हों तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।

१२-यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान से एक सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो, तो किसी स्त्री के माध्यम से उसका भाग्योदय होता है।

१३-यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकलती हो, तो वह भाग्य को प्रबल बनाने में सहायक होती है।

१४-यदि रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो, तो उस व्यक्ति की धर्म में विशेष आस्था होती है।

१५-भाग्य रेखा पर धन का चिह्न शुभ माना जाता है।

१६-भाग्य रेखा गहरी स्पष्ट और लालिमा लिए होती है, तो व्यक्ति जीवन में शीघ्र ही प्रगति करता है।

भाग्योदय कारी यन्त्र
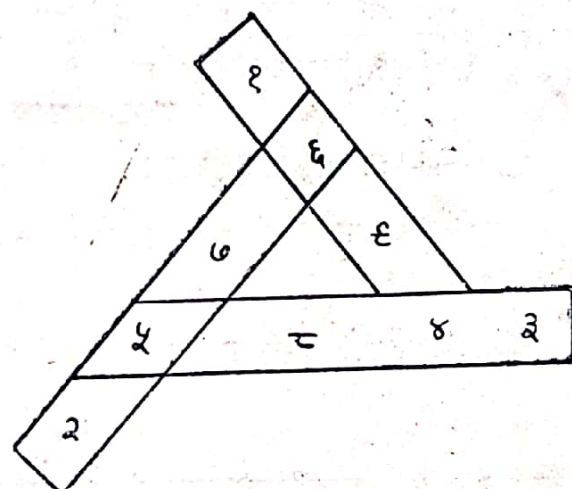
जीवन में भाग्य ईश्वर द्वारा उपहार है, इसे तराशा जा सकता है, श्रेष्ठ बनाया जा सकता है, दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है, आवश्यकता इस बात की है कि समय रहते भाग्य बाधाओं को पहिचानें, उचित समय पर उनका उपचार करें, इन बाधाओं को क्षीण बना दें, और यह सब साधना के माध्यम से सम्भव है, जीवन को तराशना श्रेष्ठ बनाना व्यक्ति के स्वयं के हाथ में है। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
लक्ष्मी आबद्ध की श्रेष्ठतम प्रक्रिया	६	पारद श्रीयन्त्र	३६०)रु०
		कमलगट्टा माला	६०)रु०
		भूगर्भ श्रीयन्त्र	२१०)रु०
		व्यापार श्रीयन्त्र	१५०)रु०
		लघु श्रीयन्त्र	७६)रु०
		तांबे पर अंकित श्रीयन्त्र	१२०)रु०
		पंचधातु पर उत्कीर्ण श्रीयन्त्र	२४०)रु०
		एक हजार कमलबीज	३३३)रु०
१-बीजात्मक लक्ष्मी प्रयोग	१५	बीजात्मक लक्ष्मी स्वरूपा यन्त्र	१५०)रु०
		१०८ कमलबीज	५१)रु०
२-ज्येष्ठा लक्ष्मी अनुष्ठान	१५	ज्येष्ठा लक्ष्मी यन्त्र	११०)रु०
		आठ शक्तिचक्र	६०)रु०
		वश्यमान चक्र	४५)रु०
		कमलगट्टा माला	६०)रु०
३-इन्द्राक्षी धनदा प्रयोग	१६	इन्द्राक्षी धनदा यन्त्र	१५०)रु०
		रतिप्रिया सिद्धि माला	१२३)रु०
		आठ शक्ति तन्त्र हेम्भोज	८०)रु०
धन्वन्तरी प्रयोग	१७	पंचकूटात्मक इन्द्रजिद्	१४०)रु०
		विष्णतेजस कंकरण	३००)रु०
		मायादिकाम मुद्रिका	१८०)रु०
त्रिपुर मदनाक्षी अप्सरा साधना	२१	त्रिपुर मदनाक्षी चेतनी गुटिका	१५०)रु०
		२१ वाग्भव बीज	७५)रु०
		नव चेतन प्राकाम्य	६०)रु०
		आठ अष्ट अप्सरा सिद्धि रत्न	२१०)रु०
पुत्रेष्टि प्रयोग	२५	पुत्रदा यन्त्र	१२०)रु०
		पांच मधुरूपैरा रुद्राक्ष	६०)रु०
		पुत्रजीवा माला	२४०)रु०
नचिकेता प्रयोग	२६	१२ सविता चक्र	१२०)रु०
		हिरण्मयेन पात्र	१११)रु०
		अग्नि प्रोक्त यन्त्र	१०५)रु०
काल भैरव शत्रु बाधा निवारण प्रयोग	३५	काल भैरव गुटिका	७०)रु०
		पांच आक्रान्त चक्र	७५)रु०
२-रोग नाश प्रयोग	३५	काल भैरव महायन्त्र	१५०)रु०
३-मुकदमा में विजय प्रयोग	३६	काल भैरव महाशंख	२१०)रु०
		एक नाग चक्र	२१)रु०

सर्वकाम सिद्धि धन्यैश्वरी रसलक्ष्मी महायन्त्र

प्रपत्र

मैं "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" पत्रिका का सदस्य हूं और पूज्य गुरुदेव की कृपा का यह अमृत-फल, यह विशिष्ट यन्त्र प्राप्त करना चाहता हूं, मुझे यह उपहार अवश्य भेजा जाय।

मैं वचन देता हूं कि आप मुझे लक्ष्मी सिद्धि दिवस दीपावली की रात्रि को पूज्य गुरुदेव के कर कमलों से सिद्ध यह उपहार रूपी यन्त्र १११)रु० की वी०पी० से अवश्य भेज दें, वी०पी० छूटने पर यह धनराशि मेरे सन् ६२ की सदस्यता शुल्क में जमा कर रसीद मुझे भेज दें।

मेरी सदस्यता संख्या .. ..

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

मेरे परिवार में निम्न सदस्य हैं, जिनके स्वास्थ्य, उन्नति, सौभाग्य हेतु यह यन्त्र, मन्त्र सिद्ध करना है—

१-नाम .... (आपसे सम्बन्ध) .... २-नाम .... (आपसे सम्बन्ध) ....

३- ,, ... ,, ... ४- ,, ... ,, ...

५- ,, ... ,, ... ६- ,, ... ,, ...

७- ,, ... ,, ... ८- ,, ... ,, ...

उपरोक्त पारिवारिक विवरण में परिवार के सदस्य का नाम और आपसे उनका सम्बन्ध यथा—माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी, पुत्र, पुत्री इत्यादि स्पष्ट लिखें।

नोट : यह प्रपत्र एक अलग कागज पर साफ उतार कर पूज्य गुरुदेव के नाम अनुरोध पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर कार्यालय को ३०-१०-९१ तक हर हालत में भेज दें। ★

नोट : आजीवन सदस्य, पंच वर्षीय सदस्य अथवा वे सदस्य जिन्होंने अपना नवीनीकरण सन् ९२ के लिए करा लिया है, वे भी वी०पी० द्वारा यन्त्र प्राप्त कर अपने किसी बन्धु, स्वजन को सदस्य बना सकते हैं। ●

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

आपकी यह पत्रिका

आपकी यह पत्रिका तो गुरु वाणी से अलंकृत जीवन्त दस्तावेज है, आपके भीतर छिपे हुए श्रेष्ठ शक्ति तत्व को प्रकट करने की प्रक्रिया है।

आप साधक हैं

आपने अपने इस जीवन के कदम उस श्रेष्ठ पथ पर डाल दिये हैं, जिस पर आपका सौभाग्य, श्री, आत्मोन्नति, सम्पूर्ण विकास प्राप्त होगा ही।

आप शिष्य हैं

इस अलौकिक तत्व को ग्रहण कर आपने अपने जीवन की सारी चिन्ताओं का भार सौंप दिया है पूज्य गुरुदेव के चरणों में, अपने आप को समर्पित कर दिया है उस कोटि-कोटि सूर्यों के समान तेजस्वी व्यक्तित्व को, जिसके द्वारा आप अपने वर्तमान जीवन को सार्थक बना सकते हैं, स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी।

आपके अधिकार

आप उस विशाल परिवार के सदस्य हैं, जिसके प्रत्येक सदस्य का व्यक्तित्व निराला है, आप गुरु कृपा का फल प्राप्त करने के अधिकारी हैं।

अपनी पीड़ा अपने आंसुओं के साथ गुरु चरणों में डाल कर गुरु वरदहस्त से जीवन में सुखों की चेतन क्रिया प्राप्त करने के अधिकरी हैं।

आपके कर्त्तव्य

पत्रिका की सदस्यता आपके हाथ में दिया गया एक अद्भुत शंख है, इस शंख का जयघोष आपको हर क्षेत्र में करना है, याद रखें आप एक विराट् शक्ति के अंश हैं और आप में पूर्णता के सभी तत्व विद्यमान हैं।

अपने इस महा गौरव "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान" को पूरे आत्मविश्वास के साथ बढ़ाएं, स्वयं चिन्तन करें, मनन करें, यह गौरवशाली पत्रिका हर घर, हर परिवार में अपना प्रकाश आलोकित करे।

आपने एक कदम बढ़ाया है, अभी बहुत कुछ करना बाकी है

आज ही अपनी सदस्यता का वर्ष ९२ के लिए नवीनीकरण कराएं और संकल्प लें—अधिक से अधिक सदस्य बनाने का, व्रत लें जीवन में कुछ नया करने का, तभी जीवन की सार्थकता है। ●